प्रकाशक—

पन्नालाल बाकलीवाल

महामंत्री—भारतीयजैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था,

९ विश्वकोष लेन, बागबाजार, कलकत्ता।



मुद्रक—

श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ,

जैनसिद्धांतप्रकाशक पवित्र प्रेस

८ विश्वकोष लेन, पो० बागबाजार—कलकत्ता।




श्रीवीतरागाय नमः ।

स्वर्गीय कविवर पंडित श्रीमद्-रामचंद्रजी विरचित

# श्रीचतुर्विंशतिजिनपूजाविधान ।

---

मंगलाचरण .

दोहा ।

सिधिवुधिदायक कर्मजित, भरमहरन भयभंज ।
चौवीसो जिन द्यो मुझे, ज्ञान, नमूं पदकंज ॥ १ ॥

अथ जिन अष्टोत्तर नाम नमस्कार।

कवित्त

गा संसारिमझारि असातातप हूं,
स्वामिन्! आयो सरनि हरो दुख, भक्त हूं।
हरो निस्पृह तुम्हीं भोगतैं नाथजी,
नमूं नमूं तुम पाय जोरिकैं हाथजी॥ १॥
तीर्थंकरपद वंदि जिनाधीसा नमूं,
विभू नमूं सुधमती नमूं जिन दुख वमूं।
अकलंको नमि नमूं महाबोधक सही,
केवलबोधक जिस्नु नमूं महानंद ही॥ २॥
महानंद नमि नमूं चिदानंद बुद्ध ही, विस्नु स्वयंप्रभ नमूं चिदोत्तम सु
महा ईस्वर सुद्ध धनंजयहूं नमूं, शंकर काम सुगत महेश्वर तें रमूं

...मूं अनंती भीम जितांतक केवली, स्वयंज्योति भूते स्मृतं जय जीवली
नमूं जिनोत्तम हरी कलाधर शुक्रही, जजूं उमापति चंद्र विघू चतुवक्त्रही
वेदवित नामि नमूं वेद पारंगत तुही, कमलासनश्रीमानवृषभनामिहूंसही
नमू वृहसपातिअजितकर्मकरताजजूं द्वादस आतम सुद्ध करमहरता भजूं
नमू केवलालोक स्वयंभू माघव । गोतमभूतं नामि नमूं अब्जभू साघव ॥
नमू नमू ईसान भूत वत्सल नमूं । स्वामी वासव नमूं अर्धनारी पमूं ॥१॥
जेष्ठ नमूं श्रीकंठ आत्मभू ध्यायही, नमूं वेदकरतार निरंजन गायही ॥
समतागतकूं वंदि सुयागीसादि ही, कोविदके नमि पाय नमूं अष्टादिही
नमूं निरंवर सांति निराकांखीतुही, निरारेक नामि नमूं निकल निर्मलसही
संसारापरवराजितके पद वंदि ही, चेतन चेता वंदि धीर सुखकंद ही ॥
वंदू मैं चिद्रूप अकरता निर्गुणो, नमूं महोत्तम पाय मोरजित सद्गुणो

१ काम ।

जितमत्सर नमि नमूं सिद्धि भरता सही नमूं धर्म करतार धमनकी तुही
वीतराग नमिनमूं विदामान्यौ सदा, सुधर्मा भृतनमि नमूं विधानाजी मुदा
नमूं ज्ञानाग्नि ज्ञान निरहारक तुही, स्याद्वाद विधिवेद अन्वेषो सुमसही
मूलमार परकाशक सुभ धापाक्षही द्वैपमाण नमिनमूं सुनय गुरुभाषिही
प अद्वैतवागीस नयानेना सही, तुही सुनय समार विधिवेधक सही॥
नमूं नमूं एकांतमना सनेतही, नमूं निरहना पापसमुच्चय ये सही ॥
प अष्टोत्तर नाम अमल गुण त भ॰, चतुर्वीस तीर्थेस पूजि लखिकैं धरे
संत अष्टोत्तर नाम कंठ ये बुध धरैं, महा सुष्ट सुधार नरोत्तम उबरैं
नर सुरके सुख भोगि चक्रवति थापई, सिद्ध वधूवर होइ सदा सुखपाय ही

दोहा—जे नर पढे त्रिकालही संपति राज्य महान
रामचंद्र जिन सम लहै पावे मोक्ष निदान ॥ १४ ॥

इतिसुलोकि लिखे ।

( [illegible] )

समुच्चय चौवीस तीर्थंकरकी पूजा,

अडिल।

वृषभ आदि अतिवीर चतुर्विंशति जिना,
ध्यान खडग गहि हते कर्म वसु दुर्जना।
वसुगुणजुत वसुधरा ठये भव छारिकें,
आह्वानन विधि करूं गुणौघ उचारिकें॥ १॥

ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनाः! अत्रावतरत अवतरत संवौषट्।
ॐ ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनाः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः।
ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनाः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट्।

गीता छंद

कर्पूरवासित सरद ससि सम धवल हार तुषारतैं।

१ पाठ।

धवल सालि अखंड डिंडी, पिंड ना मुक्ता जिसी ।
नृप भोग जोग मनोग्य चित्तहर, गंधतें मधुकर खुसी ॥
पद अखै कारन क्षालि जलतें, उभै करमें लेयही ।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुण गण धेयही ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥
विमल गंध सुगंध कृत दिग्, कुसम वर्न सुहावने ।
ललचाय लोचन घ्राणहारी, मधुप कोरालिया बने ॥
सो समरवाण विध्वंसकारण, अमर तरुके लेय ही ।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुणगण धेय ही ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ।
सुरभि घीव सुगंधतें, पकवान बहु विधि कीजिये ।
रस खड जु दै करि सुवर्न भाजन सद्य मनहर लीजिये ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फल मनोहर पक्क मधुरे, सुर्नंसे रलिया वनैं ।
ललचाय लोचन घ्रान रंजन, रसनकूं प्रिय पावनैं ॥
भरि थाल कनकमय अमर तरुके, उभै करमें लेय ही ।
चउवीस जिन वृषभादिके, पद जजूं गुणगण धेयही ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नीर गंध इत्यादि ले पद , चतुर्विंशति जिनतनै ।
जो जजैं ध्यावैं वंदि सतवै, ठानि उत्सव अति घनै ॥
सुर होय चक्री काम हलधर, तीर्थपदकी श्रयही ।
सुख 'रामचंद' लहंत सिवकै, अर्घ करि प्रभु धेयही ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरांतेभ्योऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अडिल्ल ।

वचन सुधासम भाषि सबै जन तोषिया, नृपपदमें धनधान देय बहु

पूरन सुर गिरि मज्जन ठानि, वृषभनाथ पूजूं धरि ध्यान ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं [illegible] श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व-
पामीति स्वाहा ।

[illegible] तप कल्याण होय । तजि उपाधि सब मुनिवर होय ।
[illegible] अचल । पूजे मैं पूजूं सिवदेन ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं [illegible] तपकल्याणमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व-
पामीति स्वाहा ।

फागुन असित इकादसि ज्ञान, उपज्यो धर्म कह्यो भगवान ।
चतुर निकाय देव नर नारि, पूजे मैं पूजूं भव तारि ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णएकादश्यां ज्ञानकल्याणमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा०
माघ असित चौदसि सिवसेन, हने मोक्ष पायो सिवदेन ।
सुर नर खग कैलास सुथान, पूजे मैं पूजूं धरि ध्यान ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीआदिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व०

अथ जयमाला ।

अडिल ।

आदि जिनेश्वर आदि लब्धि केवलमई ।
समोसरन धनदेव रच्यो को वरनई ॥
द्वादस जोजन ठीक महा सोभा धरैं ।
बीस सहस सोपान सुरासुर जे करैं ॥

पद्धरि छंद ।

जय धूप माल पण रतन चूर, दिग मानसथंभ उद्योत सूर ॥
चउ वापी मधि अंबुज सुहाय, लखि मानीको मद भंग थाय ॥ १ ॥
जय खाई मधि नीरज मराल, वन रत्नलता बहु कुसुम जाल ।
प्राकार रतनमय तेज भान, चउ गोपुर प्रति द्वै धूप दान ॥ २ ॥
मग मग तोरण द्वै नाट साल, सुरतिय गावें जिनगुण विशाल ॥
वन सुरतरु चैत्य अशोक आम, पुन वरन वरन वन सर्वठाम ॥ ३ ॥

चामीकर वेदी चव दुवार, तन च्यारि फेरि शोभा अपार ॥
कल्पोन नार दूजो उतंग, चव गोपुर पूरव उत सुचंग ॥ ४ ॥
तह ...र्दा नव चार चार, कहुं वेदी परवत गेह सार ॥
सिद्ध ... रूप मनहर महरूप, जिन बिंबांकित बहु पुनि सरूप ॥ ५ ॥
कहुं ...ता भवन गावे कल्यान, बहु बाजे वीन मृदंगतान
नाचें किंनर गंधर्व गीत, जिनगुण गावें अपछर संगीत ॥ ६ ॥
सब द्वारपाल कर गदाजूत, कर जोरि चलें सुर खचर भूप ॥
फिरि फटिक कोट सोभा अपान, चउ गोपुर मंगल द्रव्य जान ॥ ७ ॥
गणि सभा बनी द्वादस अनूप, सित चंद्रकांति मणिको सुतूप ॥
जय गंधकुटी आमोद सार, भुज सिखर कलस उद्योतकार ॥ ८ ॥
जय आदि पीठ षोडस सिवान, मनु षोडस भावनके निधान ॥
जय दुतिय पीठ वसु गुण चढाय, जय त्रितिय पीठ वसु भव लसाय।

जय सिंघपीठ परि कंवल सार, जिन अंतरीक आनन सु च्यार ॥
जय भामंडल छवि कोटि भान, अरु छत्र तीनतें ससि लजान। १०।
जय तरु अशोकतें शोक दूर, जसि चवर करें चउसठि हजूर ॥
है मागधि भाषा कोस च्यार, सुर पुष्पवृष्टि शोभा अपार ॥ ११ ॥
नभ दुंदभि बाजें अति गभीर, अघ द्वादस कोटिन शब्द भीर ॥
सुर असुर करें जय नंद नंद, चालै समीर अति मंद मंद ॥ १२ ॥
जय देव अनंत चतुष्ट धार, दरसन सुख वीरज ज्ञान सार ।
जय तीन काल दिव ध्वनी होय, सुनि समझि जाय दस प्रान सोय ॥
भु दर्पण सम कंटक न कोय, पट ऋतु फल फूल सुगंध होय ॥
जन्माविरोध प्राणी न रोय, पद कमल रचें जासि सर्व तोय ॥ १४ ॥
प्रभु गुण अनंत भाषे न जाय, मैं अल्प बुद्धि सुरगुरु थकाय ॥
मैं अरज करूं करि धारि सीस, मुझ तारि तारि भवतें जगीस । १५ ।

घत्ता।

इह जिनगुण सारं, अगम अपारं, जो भवि जन कंठे धरई।
हनि जर मरणा रुजि, नाशि भवावलि, 'रामचंद्र' शिवतिय वरई॥

ओं ह्रीं श्रीआदिनाथजिनेंद्राय महार्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीआदिनाथ जिनपूजा समाप्त।

---

# अथ श्रीअजितनाथजीकी पूजा।

अडिल्ल।

सकल कर्म हनि अजित जिनं शिव खेतमें।
गिरि समेदतें गये तिनोंके हेत में॥
आह्वानन संस्थापन अरु सनिधि करूं।
मन वच तन करि सुद्ध वार त्रय उच्चरूं॥१॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ

जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः  ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

त्रिभंगीछंद ।

गंगा तमनीरं, प्रासुकमीरं, कनकरतनमय भृंग भरौं ।
जर मरन पिपासं, हरि सब त्रासं, मन वच तन त्रय धारकरौं ॥
श्रीअजितजिनेस्वर, पुहमिनरेस्वर, सुरनरखगवंदित चरणं ।
मैं पूजूं ध्याऊं, गुण गण गाऊं, सीस नवाऊं अघहरनं ॥ १

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं नि० स्वाहा ।

मलिपागर ल्यावें, अगर मिलावें, केसरयुत घनसार घसें ।
भवताप निवारन, शिव सुख कारन पूजि जिनेश्वर पाप नसें ॥ श्रीअ०

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि० स्वाहा ।

तंदुल सु अखंडित, सौरभमंडित, मुक्तासम जिनपद आगें ।
करि पुंज पियारी भव भ्रमटारी लहै अखैपद भय भागें ॥ श्रीअ०

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

देखत ही सोहै सब मन मोहै कुसुम कनकमय रतन जड़ा ।
सुर नर पशु सारे काम विदारे पूजत बाण मनोज उड़ा ॥
श्री अजित जिनेश्वर पुहमि नरेश्वर सुर नर खग वंदित चरनं
मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

अति मिष्ट मनोहर घेवर गूजा फेनी मोदक थाल भरूं ।
बहु छुधा सतायो पूजन आयो हरो वेदना अरज करूं ॥
श्रीअजित जिनेश्वर पुहमि नरेश्वर सुर नर खग वंदित चरनं ।
मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धरि कनकरकावी. रतनसुदीपक. जोति ललितकरि प्रभु आगे ।

सघ मोह नसावे ज्ञान वधावे लासि आयो परबुधि भागे ॥
श्रीअजित जिनेसुर पुहमिनरेसुर सुर नर खग वंदित चरनं।
मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
कृष्णागर लेऊं जिन ढिग खेऊं गंध दसोंदिसि धावत है।
बहु मधुकर आवें परिमल भावें अष्टकर्म जरि जावत हैं॥
श्रीअजित जिनेसुर पुहमिनरेसुर सुर नर खग वंदित चरनं।
मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्रायाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
अति मिष्ट मनोहर नैननके हर उत्तम प्रासुक फल लावें।
श्रीजिनपद धारे चउगति टारे मोक्ष महाफल लहु पावें ॥
श्रीअजित जिनेसुर पुहमिनरेसुर सुरनर खग वंदित चरनं।

मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ निरमल नीरं गंधगहीरं तंदुल पहुप सु चरु ल्यावें।

फुनि दीपं धूपं फलसु अनूपं अरघ "राम" करि गुण गावें ॥

श्री अजित जिनेसुर पुहमि नरेसुर सुरनर खग वंदित चरनं।

मैं पूजूं ध्याऊं गुण गण गाऊं सीस नवाऊं अघहरनं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथभगवज्जिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ।

दोहा।

विजै विमानथकी चये, विजया गर्भमझार।

जेठ अमावसि अवतरे, जजूं भवार्णवतार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावस्यायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ सुकुल दसमी सुरा, जन्म जिनेस निहार ।
सुर गिरि सनपन करि जजे, मैं पूजूं पदसार ॥ २ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लदशम्यां जन्मकल्याणसहिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

माघ शुकुल दसमी धर्यो, तप वनमें जिनराय ।
सुर नर खग पूजा करी, हम पूजैं गुण गाय ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पोह सुकल एकादसी, केवलज्ञान उपाय ।
कह्यो धर्म पदजुग जजे, महाभक्ति उर लाय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषशुक्लैकादश्यां ज्ञानकल्याणमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चैत सुकल पंचमि विषै, अष्ट कर्म हनि मोख ।
अजित समेदाचल थकी, गए जिजूं गुण पोख ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअजितनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

## अथ जयमाला.

दोहा ।

सकल तत्त्व ज्ञायक सुधी, गुण पूरन भगवान ।
धरम धुरंधर परम गुरु, नमू नमू धरि ध्यान ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद ।

जय जय श्रीअजित जिनेस देव, तुम चरन करूं दिनरैन सेव ॥

जय मोक्षपंथ दातार धीर, जय कर्ममैल-भंजन सुवीर ॥ १ ॥
जय पंच महाव्रत धरनहार, तजि राज्य भये वन ध्यान धार ॥
जय पंच समितिपालक जिनंद, त्रय गुप्ति हरन शनि परमकंद ॥ २॥
धरि ध्यान भए चिद्रूप भूप, गिरि मेरु समानो अचल रूप ॥
जय घातिकरम को नास ठान, उपजायो केवलज्ञानभान ॥ ३ ॥
तब समवसरन रचना बनाय, हरि हरिषो मन आनंद पाय ।
कुछ हरि सों वरनन भक्ति भाय, जिन बोलन है निक अंग स्वाय ।४।
जय पंच रतनमय धूलसाल, चउ गोपुर मन मोहन विशाल ।
जय मानसथंभ सुतुंग चंग, हस्ति मानी नावैं आय अंग ॥ ५ ॥
चउ वापी निर्मल नीर सार, सुभ बोलन जहँ चकवा मरार ।
जल भरी खातिका गिर्द रूप, पुष्पनिकी वाडी अति अनूप ॥ ६ ॥

---

१ इंद्र। २ हस्ति। ३ फूले छोर। ४ खाइका।

सुभ कोट दिपै जिम तेज भान. नृतशालामें गावें कल्यान।
पुनि वन सोभा वरनी न जाय. राजत वेदी बहु धुज उडाय ॥ ७ ॥
फिरि कोट हेममय सुघरसार. बहु कल्पद्रुम वन सोभकार ।
नव रतनराशि सोभित उतंग, ऊंचे मंदिर जहं बहु सुरंग ॥ ८ ॥
फिर फटिक कोट सोभा अपान, मंगल द्रव्यादिक धूप दान।
मधि द्वादस वनिय सभा अनूप, मुनि सुर नर पशु बैठे सुभूप ॥ ९ ॥
बिचि तीन रतनमय तुंग पीठ, वेदी सिंहासन कमल ईठ।
जिन अंतरीक्ष आनैन सुचार, धर्मोपदेश दे भव्यतार ॥ १० ॥
तिन छत्र तीन उद्योतकार, तरु है अशोक जन शोक टार।
गंधार मिष्ट जुन पुष्प वृष्ट, नभि दुंदुभि बाजै मिष्ट मिष्ट ॥

आकाश । ५ गुण ।

अति धवल चंवर चौसठ दुराय, भामंडल छवि वरनी न जाय।
ऐसी विभूति जिनराज देव, नमि नमि पुनि पुनि करहौं जु सेव ॥१२॥

घत्ता।

श्री अजित जिनेसुर, नमत सुरेसुर, पूजें खेचरगण चरणं।
नरपति बहु ध्यावें, सिव पद पावें 'रामचंद्र' भवभयहरणं ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्री अजितनाथजीकी पूजा संपूर्ण।

# अथ श्रीसंभवनाथपूजा।

दोहा।

संभव करम हने सबै, सिव समेदतें पाय।
आह्वानन स्थापन करूं, मम सन्निहनि भव आय ॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्र अत्रावतर अवतर। संवौषट्। ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथ-

---

१ जिनधर्मधर सहूह।

सिंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र ! अत्र मम सन्नि-
हितो भव भव । वषट् ।

त्रिभंगी छंद ।

मैं तृषा सतायो, अति दुख पायो, जल लायो प्रभु तुम आगे ।
भरि कंचन झारी, धार उतारी, जन्म मृती ततछिन भागे ॥
मैं भव भव तोर्‌यो, मोह मरोर्‌यो, जोर्‌यो आतमसों नेहा ।
हूं पूजूं ध्याऊं, सीस नवाऊं तारि तारि विलम्ब जु केहा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा-
मीति स्वाहा । जलं ।

भव ताप सतायो, तुम ढिग आयो, चंदन ल्यायो अति सीरा ।
हो सिद्ध निरंजन, भवभयभंजन, तुम पूजूं हरि भवपीरा ॥

---

१ मरण । २ प्रीति । ३ बहुत ठंडा । ४ शृगाल ।

भव भव तोरयो, मोह मरोरयो जोरयो आतमसों नेहा।
है पूजू प्याजू, शीश नवाऊं तारि तारि विरम जु केहा॥
ओं ह्रीं अभवनःश्वमणजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
भव वास बसेरा, तोरो मेरा, मैं चेरा तुम गुण गाऊं।
तंदुल सुअखंडित, सौरभि मंडित, पुज करूं शिव पद पाऊं॥
भव भव तोरयो, मोह मरोरयो जोरयो आतमसों नेहा।
है पूजू प्याजू शीश नवाऊं तारि तारि विरम जु केहा॥ ३॥
ओं ह्रीं श्री संभवनाथ स्वरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
यो काम महाभट, जासे कारे तीनों हरि हर ब्रह्मादिक सब सारे।
मैं पूजन आयो, प्रासुक लायो, कुसुम मदनसर हरि प्यारे॥ संभव०।
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथस्वरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह छुधा हत्यारी अति दुखकारी मोहि सतावत है तातैं।
वर मोदक लायो पूजन आयो, हरो वेदना प्रभु यातैं॥
संभव भव तोर्यो मोह मरोर्यो जोर्यो आतमसौं नेहा॥
हूं पूजूं ध्यावूं सीस नवावूं तार तार विलम्ब जु केहा॥ ५॥
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथभगवज्जिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मोह महातम छाय रह्यो मम ज्ञान हन्यो अति दुख दीनो।
मणि दीप ले आओ, ध्वांत नसायो पूजत पद चेतन चीनो॥ संभव०
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथभगवज्जिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥
ये दुष्ट जु कर्म बडे अधर्म दुख देवें कबलों गावें।
कृष्नागर धूपं मलय अनूपं पद खेवें लहु जरि जावें॥ संभव भव०॥
ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
मोक्ष महा मग रोक रह्यो, अंतराय कर्मबल मो रोधा।
फल प्रासुक लावूं तोहि चढावूं मोक्ष मिलावो हो बोधा॥ संभव०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये निर्वपामीति फलं स्वाहा।

निर्मल नीरं, गंध गहीरं, तंदुल पुष्पं चरु लायो।
मणिदीपं धूपं फल सु अनूं अरघ "रामचंद" करि गायो॥ सं०

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याण अर्घ।

दोहा।

फाल्गुण सुदि अष्टमि चये नव ग्रीवकतैं इंद।
सेनादे उर अवतरे जजूं धर्मके कंद॥ १॥

ओं ह्रीं फाल्गुणशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय महार्घं०॥ १॥

कातिक सुदि पुनिम सुरा संभव सुर गिरि लेय।
जन्म महोत्सव करि जजें हम पूजें गुण ध्येय॥ २॥

ओं ह्रीं कार्तिकपूर्णिमायां जन्ममंगलमंडिताय संभवनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति०

... ॥ ३ ॥
...तपमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय पदार्घं नि० ।
चौथि असित कार्तिक दिवंस ध्यान खड्ग गहि वीर ।
घाति हानि केवल लयो जजूं ज्ञान हित धीर ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं कार्तिककृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०
चैत सुकल षष्ठमि दिवे शेष करम निरवार ।
मोक्षरागिनपाति भये जजूं गुणोघ उचार ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठ्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामी०

अथ जयमाल ।

दोहा—संभव निज संभव हर्‍यो मो संभव हरि नाथ ।
करूं वीनती सुमरि गुण नमूं सीस धरि हाथ ॥ १ ॥

काल तूर्य गयो पौंण सेप रह्यो पावही, उपजे संभवनाथ जगतके रावही।
माता सेनादेवि जितारि पिता नमूं, स्रावंती भवथान पूजि अघकूं वमूं॥
धनुष चारसौ तुंग कनकवपु सोहनो,
सठि लख पूरव आयु अश्व चिह्न मोहनो।
वंश इक्ष्वाकुसिंगार पूर्व लख तप कियो,
घाति कर्म चउजारि ज्ञान केवल लियो॥ ३ ॥
समोसरन धनदेव रच्यौ शोभा घनी,
ग्यारा योजन वीच एक सतपन गनी।
वीच महात्रय पीठ कमल पर जिन लसै,
अंतरीक मुख चार छत्र ससिकूं हंसै ॥ ४ ॥
चौसठि चंवर जखेश करें अतिही छजे,

साढा द्वादस कोडि जाति दुंदभि वजै ।
दिव्य धुंनि करि भवि तारे भवतैं नाथजी,
मोकूं भवतैं तारि देव ! गहि हाथजी ॥ ५ ॥
इहसंसार मझारि महादुःख मैं सहूं, तुमतैं छाने नाहिं कहा मुखतैं कहूं ।
यातैं कारज मोहि सरै तुमतैं सही, औरनतैं कहा काज सरनि तेरी गही ॥
तेरो नाम अपार उदधि नवका भली, तेरो नाम उतारि होहि सवही रली
तेरो नाम जपंत उरग ह्वै माल ही, तेरो नाम जपंत सिंघ ह्वै स्याल ही ॥
तेरो नाम जपंत रोग सवही टरैं, तेरो नाम जपंत रिद्धि घरमैं भरै ।
तेरो नाम जपंत ज्वाल जल पेखिये, तेरो नाम जपंत दुरद मृग देखिये
तेरे नाम पसाय स्वान सुर थायगो,
मो मन मैं तुम नाम भलीविधि आयगो ।
तो अव चिंता कौन मोछि पद पायस्यौं,
सुर पदकी कहा वात भूती ह्वै चायस्यौं ॥ ६ ॥

दोहा । १०

२८ संभव जिनकी थुति इहै जो पढिसी मनलाय ।
"रामचंद" सुख शिव भले पावै सहज सुभाय ॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीसंभवनाथपूजा समाप्त ।

## अथ श्रीअभिनंदननाथपूजा ।

---

अडिल्ल ।

घाति हने लहि ज्ञान बोधि भवगिरि ठये.
हनि अघाति अभिनंद सिवाले थिर भये ।
आह्वानादि विधि ठानि वारत्रय उच्चरूं,
संवौषट् ठः ठः वषट् त्रियविध करूं ॥ १ ॥ २९

...श्रीअभिनंदन जिनेंद्र। अत्र ... अवतर। संवौषट्।

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदन जिनेंद्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदन जिनेंद्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

त्रिभंगी छंद।

उज्वल जल प्रासुक, अमल सुवासित, गंगादिक हिम तटहारी।
तुम पूजन आयो, अति सुख पायो, हरो जनम मृति दुखकारी॥
अभिनंदन स्वामी, अंतरजामी, अरज सुनो अति दुख पाऊं।
भव वास बसेरा, हरि प्रभु मेरा, मैं चेरा तुम गुण गाऊं॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं नि०।

शुभ कुंकुम ल्यावे, चँदन मिलावै, अगर मेलि घनसार घसै।
श्रीजिनवरआगे, पूज रचावै मोहताप तत्काल नसै॥ अभि०॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥

रा. मुक्तामम तंदुल, अमल अखंडित चंद किरन सम भरि थारी । पू०
४० करि पुंज मनोहर, जिन पद आगें लहौं अखै पद सुखकारी ॥ अभि०॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

मंदार जु सुंदर, कुसुम सुल्यावें, गंध लुब्ध मधुकर आवें ।
जिनवर पद आगें, पूज रचावें समरवान नासिकें जावें ॥ अभि० ॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नानाविध चरु लै मिष्ट मनोहर, कनकथाल भरि तुम आगें ।
पूजन कूं ल्यायौ, अति सुख पायो, रोग क्षुधादि सबै भागें ॥अभि०॥

ओं ह्रीं अभिनंदनजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ।

मुझ मोह सतायो अति दुख पायो ज्ञान हर्‍यो करिकै जोरा ।
मणि दीप उजारा तुम ढिंग धारा हरो तिमिर प्रभुजी मोरा ॥ अभि०

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४०

...नागर ल्यावें, अगर मिलावें, भरि धूपायन प्रभु आगें।
खेये शुभपारिमलतें, मधु आवें करमजरें निज सुख जागे ॥ अभि०
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥
फल उत्तम ल्यावें, प्रासुक मोहन गंध सुगंधे रसवारे।
भरि थाल चढावें, सो फल पावें मुक्ति महा तरुके प्यारे ॥ अभिन०
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥
करि अर्घ महाजल, गंध सु लेकरि, तंदुल पुष्प सु चरु मेवा।
मणि दीप सु धूपं,फल जु अनूपं "रामचंद" फलसिवसेवा ॥ अभिन०
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पंच कल्याणक अर्घ।

दोहा—अष्टमि सित वैसाख तजि, विजय विमान सुरिंद।
अवतरि गर्भ सिधारथा, लयो जजूं गुण वृंद ॥ १॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा०

जन्म माघ सुदि द्वादसी, सुरपति लखि इत आय ।
सनपन करि सुर गिरि जिजे, हम जजि हैं गुण गाय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय महार्घं नि०

श्वेत माघ द्वादसि दिना, अभिनंदन धरि धीर ।
जगतराज तृनवत तज्यो, जजूं चरन शिवसीर ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां तपोभूषणभूषिताय श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

पौष सुकल चउदसि हने, घाति करम जिनदेव ।
कह्यौ धर्म केवलि भये, जजूं चरण जुग एव ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां ज्ञानकल्याणमंडिताय श्रीअभिनंदनजिनेंद्रायार्घं निर्व० ।

सित छट्ठमि वैशाख सिव, गये सेष हनि कर्म ।
जजू चरनजुग भक्ति करि, देहु देव निज धर्म ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठ्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्रायार्घं निर्व० ।

अथ जयमाला।

दोहा।

अभिनंदन आनंदके, दाता जगत विख्यात।
ते हूं नमन त्रिविधा सदा, मुझ आनंद करि तात ॥ १ ॥

पद्धरि छंद।

जय अभिनंदन आनंद कंद। जय तात स्वयंवर धर्मवृंद ॥
जय देवि सिधारथा उदर सार। अवतार अजोध्यापुरमझार ॥
वपु कनक चाप त्रियमें पचास। इक्ष्वाकुव्योममाधि रवि उजास ॥
प्रभु पूरव आय पचास लक्ष, तप धारि हने चउघाति अक्ष ॥
केवल उत्सव सुर असुर आय, जय शब्द ठानि कीन्हीं अघाय।
समवादि भूति अद्भुत अपार, रचि थुति आरंभी इंद्रसार ॥४॥
रसना सहस करिकैं अनंत, तब पार लहैं नहिं गुण अनंत।

मैं अल्प बुद्धि किम करूं बखान, तुम भक्ति जु प्रेरयो देव आन ।
जय तीन जगत पतिके सुनाथ, सुर गुरू नमूं मैं जोरि हाथ ।
जगस्वामिनके तुम स्वामि देव, जगपूज्यनिके तुम पूज्य एव
तुम ज्ञातामैं सर्वज्ञ ईश, तपसिनमें तुम तपसी गिरीस ॥
तुम जोगिनमें जोगी महंत, हो पर्म जिनेसुर जिन कहंत ॥ ७॥
जय विश्व उधारन दुख्ख निवार, निरवांछिहितू जगके अधार।
जय उभै श्रीराजित अपार, निरग्रंथ महा मुनिके मझार ॥८॥
जय सची आदि करि सेव्य पांय, स्तवूं महान ब्रह्मचारणाय ।
तुम सकल द्रव्य परजय लखान, जुगपतहिं स्वरूप निर्मुक्ति ज्ञान
तुम दरसन रविकरि तम अज्ञान, जुन पाप नसै प्रगटै कल्यान।
हूं नमूं चरन जुग जोरि पान, गुणसिंधु सरन तुम नाहि आन॥
हूं धन्य भयो तुम निकट आय, मो जीतव धनि तुम चरन पाय।

तुम धन्यनाथ किरपानिधान, "चंदराम" कहैं दे मुक्ति थान ॥१०

घत्ता।

इह थुति अभिनंदन, पाप निकंदन, जो भवि गावैं सुर धरई।
ह्वै दिवि अमरेसुर, पुहमि नरेसुर, लहु पावह शिवसुखवरई ॥
ओं ह्रीं अभिनंदनजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्री अभिनंदनजिनपूजा समाप्ता ॥

## अथ श्रीसुमतिनाथजिनपूजा।

अडिल्ल।

संवौषट् ठः ठः वषट् त्रिविधा करूं,
आह्वानादि विधि ठानि वारत्रय उच्चरूं।
सुमति जिनेस्वर पाय जजनके काजही,
गिरि समेद कल्याणक मोछ विराजही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

गीता छंद ।

अति सुच्छ उत्तम नीर प्रासुक, मिश्र गंध मिलायये ।
भरि हेम झारी पूजि जिनपद, जनम मरन नसायये ॥
श्रीसुमति जिनवर सुमति द्यो, मुझ पूजिहूं वसु भेवहीं ।
मैं अनन्त काल अकाज भटिक्यो, विना तेरी सेवहीं ॥ २ ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपा०

कपूर केसर अगर लेकर, घसौं चंदन बावना ।
जिन पूजि भरि जन भावसेती, मोह ताप नसावना ॥ श्रीसुमति० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तंदुल सुनिर्मल लेहु दीरघ, जानि मुक्ताफल यही।
जिन चरण आगें पुंज करिये, अखैपद पावै सही ॥ श्रीसुमति० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथभगवज्जिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
मण वरण कुसुम सुगंध प्रासुक, अमर तरुके ल्यायये।
जिनपद कमल आगे चढ़ोडे[1], मदन बाण नसायये ॥ श्रीसुमति० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
सरस मोदक मिष्ट घेवर, कनक थाल भराइये।
जिन पूजि भव्य नैवेदि सेती, क्षुधा रोग नसाइये ॥ श्रीसुमति० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तेज मणिमय दीप सुंदर, करत तमको नासही।
जिन पूजि भविजन भाव सेती, होय ज्ञान प्रकासही ॥ श्रीसुमति० ॥
ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ चढ़ाना

कपूर किस्नागर सुचंदन, धूप दहन हुतासनं।
धरखेय भवि जिनचरण आगे, अष्ट कर्म विनासनं ॥ श्रीसुमति० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम श्रीफल चारु पूंगी, मधुर मनहर ल्यायये।
पद कमल जिनके पूजिते हीं, मोछिके फल पायये ॥ श्रीसुमति० ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अरु दीप ही।
वर धूप फल ले अर्घ कीजे, "रामचंद्र" अनूप ही ॥
श्रीसुमति जिनवर सुमति द्यौ मुझ, पूजि हूं वसुभेव ही।
मैं अनंत काल अकाज भटिक्यौ, जिना तेरी सेवही ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर किस्नागर सुचंदन, धूप दहन हुतासनं।
वरखेप भवि जिनचरण आगे, अष्ट कर्म विनासनं ॥ श्रीसुमति० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम श्रीफल चारु पूंगी, मधुर मनहर लपायये।
पद कमल जिनके पूजिते हो, मोक्षके फल पायये ॥ श्रीसुमति० ॥९॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अरु दीप ही।
वर धूप फल लै अर्घ कीजे, " रामचंद्र " अनूप ही ॥
श्रीसुमति जिनवर सुमति द्यो मुझ, पुजि हूं वसुभेव ही।
मैं अनंत काल अकाज भटक्यो, विना तेरी सेवही ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानभूषणभूषिताय श्रीसुमतिनाथाय अर्घं निर्वपामीति०

एकादम सित चैतकी, शेष करम हनि मोख।
सिखर समेद थकी गये, जजूं चरण गुणघोख ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लैक दश्यां मोक्षकल्याणभूषिताय श्रीसुमतिनाथाय महार्घं निर्वपामीति

अथ जयमाला।

दोहा।

सुमति सुमति दायक सदा, घायक कुमति कलेस।
लायक सिव पद देनके, ज्ञायक लोक असेस ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद।

जय सुमति चरण दुति नख महान। जय करमभरमतमहरन भान।
जय मेघपिता चितपदम लाल। विकसावन कूं रवि प्रातकाल ॥ २ ॥
जय मात सुमंगला उदर सार। अवतार लयो त्रय ज्ञान धार।

हो करुणानिधि जगपति अवार । सिव देहु अखै सुखको भंडार ॥१॥

घत्ता ।

इह जिन गुणमाला, परम रसाला, 'रामचंद' जो कंठ धरै ।
है सिद्ध निरंजन, भवभय भंजन, मोखरमा ततकाल वरै ॥
ओं ह्रीं श्रं सुमतिनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति सुमतिनाथजिनपूजा समाप्ता ।

## अथ श्रीपद्मप्रभजिनपूजा ।

अडिल ।

पदम करम हनि केवल लै भवि बोधिये ।
करि अघाति निरमूल सिखरतें शिवगये ॥
आह्वानन संस्थापन मम सनिहित करूं ।

अछित अखंडित दीरघ उज्वल, चंद्र किरन सम ल्यावैं ।
श्रीजिनवर पद पूजि मनोहर, तुरत अखै पद पावैं ॥ पदम जिने० ॥
ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
पंच वरनमय कुसुम मनोहर, प्रासुक चक्खु सुहावैं ।
गंध सुगंधी मधुकर आवैं, पूजत काम नसावैं ॥ पदम जिनेश्वर० ॥
ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
घेवर मिष्ट मनोहर मोदक फैनी गूजा ल्यावैं ।
श्रीजिनवर पद चरुतैं पूजैं रोग छुधा नाशि जावैं ॥
पदम जिनेश्वर पदमादायक, घायक हो भव केरा ।
है चेरा प्रभु तुमगुण गाचूं, पावूं मैं गुण मेरा ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।
दीप रतनमय ध्वांत विनाशन कनक रकावी धारैं
श्रीजिनवर पदपूजत ही नर मोह मिथ्यात्व विदारैं ॥ पदम०

... धूप निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल लौंग बदाम सुपारी एला आदि मगावैं।
श्रीजिनवरपद फलतैं पूजैं मुक्ति महाफल पावैं। पदम जिनेसुर०

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प सु चरुले दीप सु धूप मगावैं।
उत्तम फल ले अर्घ बनावैं "रामचंद" सुख पावैं॥ पदम जिनेसु

ओं ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक अर्घ।

ऊपरि ग्रीवकतैं चये छठी माघ असेत।

गर्भ सुसीमा अवतरे जजूं त्रिविध धरि हेत ॥ १ ॥

ओं ह्रीं माघकृष्णषष्ठयां गर्भकल्याणमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

कार्तिक तेरसि कृष्ण ही जनमे श्रीजिनराय ।
इंद्र महोत्सव करि जजें, जजिहूं तूर बजाय ॥२॥

ओं ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

महाभूति साम्राज्य तजि, कार्तिक तेरसि स्याम ।
वसे अरनि तप धारि जिन जजूं चरन अभिराम ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

पूनिम चैत हने अरी घाति कर्म धरि ध्यान ।
केवल ज्ञान उपाइयो,जजूं पद्म भगवान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

चौथि कृष्ण फागुन विषें हनि अघाति जिनराय ।
मोक्ष समेद थकी गये जजूं चरण गुण गाय ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणशोभिताय श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि० । पू०

जयमाला ।

दोहा ।

पदमनाथके पद पदम, मंदाअरुन अविकार ।
नमूं उभैकर सीस धरि, देहु देव मति सार ॥ १ ॥

पद्धरि छंद ।

जय पदमनाथ कौसंबिनाथ । ऊपरि ग्रीवक तजिकैं विमान ।
आयेद सुसीमा गर्भसार । वदि माघ षष्ठि चित्रा सुधार ॥ २ ॥
वदि कातिक तेरसि जन्म एव । आये तित चतुर्निकाय देव ।
जय नंद नंद करते अपार । गिरि मेरु कियो अभिषेक सार ॥ ३ ॥
धरि पदमनाम हरि पूजि पाय । नृप धारणके दरवार लाय ।

बहु नृत्य करयौ को करै बखान । लखि मगन भये पित मात आन ॥
जिन वृद्धि भये तन अरुणभान । धनु दोय मतक पंचास जान ।
तर बाल पूर्व उनतीस लक्ख । सुख मगन भये तजि राजदक्ख ॥५॥
षट वर्ष करयो तप घोर वीर । ऋतु ग्रीषममें गिरि सिखर धीर ॥
रवि किरन तपै मनु अगिनज्वाल । धरि ध्यान खडे निरभै विशाल ॥
ऋतु पावस नरुतल चतुरमास । धरि जोग खडे अहिलिख डांस ॥
ऋतु शीत तरंगनि ताल वास । बाजे समीर अनुभव विलास ॥ ७ ॥
धरि ध्यान अगिन चउ घाति जारि । लहि ज्ञान चराचर सब निहारि
समवादि सहित करिकैं विहार । धर्मोपदेस दे भव्य तार ॥ ८ ॥
षट वर्ष घाटि लख पूर्वज्ञान । सब आयु पूर्व लख तीस जान ॥
फागुन वदि चौथि समेदथान । हनिकै अघाति पहुंचे निवान ॥ ९ ॥
हूं करूं वीनती जोरि हाथ । मुझ देहु अखै पद पदमनाथ ॥

तुम कारन बिन जगबंधु देव । हट प्रचुर भवार्णवको न छेव ॥ १० ॥

घत्ता ।

कल्याणक निधिकारी, तेरसि तपधारी, चैत पूनिम प्रभु ज्ञान वरं ।
सुरनरखग आये, गुणगण गाये, 'रामचंद' नमि ध्यान करं ॥११॥

ओं ह्रीं श्रीं पद्मनाभजिनेंद्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीपद्मनाभजिनपूजा समाप्ता ।

# अथ श्रीसुपार्श्वनाथ पूजा ।

---

कवित्त ।

सुरपति नरपति फणी सभा माधि जिनतणी,
वाणी सुनि प्रतिबुद्ध होय आतम गुणी ।
जिन सुपास पद जुगल नमूं सिरनायकें,



ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा । १०

बादाम श्रीफल लौंग पिस्ता, मिष्ट खारिक लसत हो ।
जिन पूजते परम उछाहसेती, मुक्ति फल पावहीं ॥ भव पास० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अरु दीप हो ।
शुभ धूप फल ले अर्घ कीजे, 'रामचंद्र, अनूप हो ॥ भव पास० ॥

ओं ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक अर्घ ।

दोहा ।

ग्रीवक मध्य थकी चये, षष्ठी भादव सेत ।
पृथिवीदेवी उर अवतरे, जजूं मोक्षके हेत ॥ १ ॥

ओं ह्रीं भाद्रपदशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घं नि० ।

जेठ सुकल द्वादसि विपै, जनमे सुरपति आय।
नृत्य तूर धुनि करि जजै, मैं जजि हूं गुण गाय ॥ २ ॥
ओं ह्रीं जेष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्मकल्याणप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घं निर्व० ।
तृणवत ताजि साम्राज्य तप, धर्यो अरनिमें जाय ।
जेष्ठ सुकल द्वादसि विपै, जजूं पदमजुग ध्याय ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं जेष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोभूषणभूषिताय सुपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपा०
कृष्ण षष्टि फाल्गुन हने, घाति कर्म धरि धीर ।
कह्यो धर्म लहि ज्ञान जिन, जजूं हरो भव पीर ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपा०
सप्तमि फाल्गुन कृष्ण ही, हनि अघाति सिवथांन ।
गए समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय सुपार्श्वनाथाय अर्घं निर्वपामीति

जेठ शुकल द्वादशि विषैं, जनमे सुरपति आय।
नृत्य तूर धुनि करि जजे, मैं जाजि हूं गुण गाय ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्व० ।

तृणवत त्याजि साम्राज्य तप, धरयौ आरनिवैं जाय ।
जेष्ठ शुकल द्वादसि विषैं, जजूं पदजुग ध्याय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय सुपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपा०

कृष्ण षष्ठि फाल्गुन हने, घाति कर्म धरि धीर ।
कह्यो धर्म लहि ज्ञान जिन, जजूं हरो भव पीर ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णषष्ठ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपा०

सप्तमि फाल्गुन कृष्ण ही, हनि अघाति शिवथान ।
गए सम्मेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय सुपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति०

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीसुपार्श्वनाथजिनपूजा समाप्त।

# अथ श्रीचंद्रप्रभजिनपूजा।

अडिल्ल।

शुभ अतिसय चौतीस प्रातिहारिज अधिका ही,
अनंत चतुष्टयजुक्त दोष अष्टादस नाही।
आह्वानन विधि करूं नाय सिर सुध करि मनही,
लोक मोह तम हरन दीप अदभुत ससि जिनही॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठ ठ।
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

गीता छंद।

मुनि मन सम उज्ज्वल निरगत तोय सीतल मधुर सुरगथकी परै।
भरि भृंग जिनवर चरण आगैं धार दे भवभूति हरै॥
श्रीचंद्रप्रभ दुतिचंदको पद कमल नखसमलागि रह्यो।
आतंकदाह निवारि मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीं चंद्रप्रभजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप दाह दहंन मोकूं एक छिन न विसारही।
घनसार मलय थकी जिनेसुर पूजिहूं दुख टारही॥ श्री चंद्र० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार उदधि अपार तारन भक्ति प्रभु तुमरी सही।
शुभ सालि पुंज जिनाग्र करि हूं लहूं वसुगुण वसुमही। श्रीचंद्र०

---

१ पवंस २ धावसी ३ पहुप।

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

अति सुभट मार प्रचंड सरतें हने सुर नर पसु सबै ।
शुभ कुसुमस्यों पद पूजिहूं जिन हरो मनमथ दुख अबै ॥ श्रीचंद्र०॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह छुधा मोकूं दहै नितही, नैंक सुख नहिं पावही ।
चरु पिष्टतें पद पूजिहूं जिन छुधारोग नसावहीं ॥
श्रीचंद्रप्रभु दुति चंदको पद, कमल नख ससि लगि रह्यो ।
आतंक दाह निवारि मेरी, अरज सुनि मैं दुख सह्यो ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ।

अति मोहतम मम ज्ञान ढाक्यो, स्व पर पद नहिं वेवही ।
तुम चरण पूंजूं रतन दीपक, करो तमको छेवही ॥ श्रीचंद्रप्रभुदुति०

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ मलय अगर सुगंध सौरभ, धकी अलि बहु आवहीं।
जिन चरन आगें धूप खेये, कर्म वसु जरि जावहीं ॥ श्री चंद्रप्रभ०

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिनेऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोख मग अंतराय राक्यौं, मोहि निरबल जानिकें।
जिन मोछ द्यो तव चरण पूंजूं, फल मनोहर आनिकें ॥ श्रीचंद्र०

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध तंदुल पुष्प चरु ले, दीप धूप फलौघहीं।
कन थाल अर्घ बनाय सिव सुख, "रामचंद" लहै सहीं ॥ श्रीचंद्र०

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्यानक अर्घ।

दोहा।

चैत असित पंचमि चये, वैजयंततें इंद।
उदर सुलछना अवतरे, जजूं त्रिविध गुणवृंद ॥ १ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

असित पोह एकादशी, जनमे त्रुत त्रयज्ञान ।
वासव उत्सव करि जजे, जजूं जनम कल्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणमंडिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

चंद्रपुरी साम्राज्य तजि कृष्ण इकादशी पोह ।
धरचो उग्र तप वनविषे जजूं नाशाहित द्रोह ॥ ३॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपःकल्याणमंडिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

फाल्गुण सप्तमि कृष्ण ही घाति हने लहि ज्ञान ।
भव्यातम बोधे घने जजहुं ज्ञानकल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णसप्तम्यां ज्ञानकल्याणमंडिताय श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं नि०

सुकल फागुण सप्तमी, शेष कर्म हनि मोख ।
गये समेदाचल थकी जजूं गुणनके कोख ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणशुक्लसप्तम्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीचंद्रप्रभस्वामिने अर्घं निर्वपामीति

अथ जयमाल ।

दोहा ।

वसुजिन वसु क्रम हानिके, वसे धरा वसु जाय ।
हरो हमारे कर्म वसु, नमुं अंग वसु नाय ॥ १ ॥

चाल कहां आगत गुरुकी ।

अहो चंद्रदुतिनाथ ज्ञायक अंतरजामी ।
सकल लोक तिरकाल लखे जुगपत गुणधामी ॥
जे चर अचर अपार अनागततीत उपायो ।
लोकालोक निहारि लखे कछु नाहि छिपायो ॥ २ ॥
भारुपा ज्यों कर माहिं सिधारथ धारि निहारे ।
अथवा अंगुरी रेख लखे कर जुत इकवारे ॥
एसो ज्ञान अपार और कहुं नाहि सुन्यो है ।

दरसनको परताप तुहे जिन माहिं भन्यौ है ॥ ३ ॥
मैं दुख पाये घोर चतुरगति माहिं घनेरे ।
तुमतैं छाने नाहिं कहा भाखूं जिन मेरे ॥
सब शिशुकी पै बात रुयात पित जननी जाने ।
मांग्या विन नहिं देहि तोय पय धान न खाने ॥ ४ ॥
देखो करम अपार सुभट जड चेतन नाहीं ।
चेतनकूं करि रंक चोर जिम बांधत जाहीं ॥
सातों अवनिमझारि नरक दारुण दुख देही ।
कोऊ सरनै नाहिं धम्म विन निहचै येही ॥ ५ ॥
तिरजंचगति दुख घोर सहे विन संजम धारे ।
भुख प्यास लदि भार अर दे पीठ मझारे ॥
मारत वधकर घाय जाल मधि उडन पंखेरू ।
पकरि कसाई लेय सरनि नाहिं जिहिवेरू ॥ ६ ॥

मानुष गति कुल नीच विकल इंद्री चखि नाहीं ।
भूपति आगें दौरि तुरक कांधे धरि जाहीं ॥
अहि निशि चौकी देह मेह सिय घाम सहे ही ।
विन दरसन दुख येह घने चिरकाल लहे ही ॥ ७ ॥
कोऊ पुन्यवसाय बाल तपतें सुर थायो ।
हस्ती घोटक बैल महिष असवारी धायो ॥
पूरन आव जु थाय तबै माला मुरझानी ।
आरतितें तजि प्रान कुसुमभव पाय अज्ञानी ॥ ८ ॥
ऐसे दुःख अपार सहे थिरता नहिं पाई ।
क्रोध मान छल लोभ थकी दिन दिन अधिकाई ॥
तुम करुणानिधि लेखि सरनि आयो ततकारी ।
दुखको कर निरवार अहो जगपति जगतारी ॥ ९ ॥

जगनायक जगदीस जगोत्तम दृष्टि निहारो ।
मोकूं दास विचारि करो वपुतें निरवारो ॥
या वपुसंगति पाय सहे दुख और न हेती ।
यह निश्चै करि जानि लखे तुम वानी सेती ॥ १० ॥
करम विचारे कौन भूलि मेरी अधिकाई ।
अगनि सहै घनघात लोहकी संगति पाई ।
ऐसे या वपुसंग महे दुख और न सेती ॥
धनि वानी तुम देव सुनी गुरुके मुख एती ॥ ११ ॥
तुम अनुकंप पसाय, तजूं दुर ध्यान विकारो ।
वरनादिकतें भिन्न, लखूं चिद्रूप हमारो ॥
जोतिस्वरूपी देव, वसै याही घट माहीं ।
कहूं कौन सयान, लखूं तुम ध्यान उपाहीं ॥ १२ ॥

तेरे ध्यान प्रताप, करम जरि जाय अनंता।
'रामचंद' करि ध्यान, लहे सुख नर गुणवंता॥
इह भव सुक्ख अपार, और भव सुर पद पावें।
अनुक्रमतें निरवान, जिनके सुर धर करि गावें॥ १३॥

दोहा—वसु द्रव्यले सुध भावतैं, जजूं तिहारे पाय।
देहु देव शिव मुक्ष अबै, अहो चंद दुति राय॥ १४॥

ओं ह्रीं श्रीचंद्रप्रभस्वामिने महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रीचंद्रप्रभपूजा समाप्ता।

## अथ श्रीपुष्पदंताजिनपूजा।

अडिल्ल।

तीन गुपति व्रत पंच महा पन सामिति ही,
द्वादश तप उपदेश सुधारे संत ही।

पुष्पदंत जिन पाय नमूं सिरनाय ही,
आह्वानन विधि करूं एक चित थाय ही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत भगवज्जिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत भगवज्जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंत भगवज्जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

सोरठा ।

क्षीर उदधि सम नीर, भरि झारी त्रय धार दे ।
नशै जन्ममृति पीर, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व० ।

कृष्णागर घनसार, कुंकुम गंध मिलायकैं ।
भव आताप निवार, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व० ।

तंदुल धवल अनूप, मुक्ताफल सासि किरण सम।
होइ मुक्तिको भूप, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्रायाक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतान् निर्व०

दोहा।

कुसुम कल्पतरु लेय, मन मोहै चखि भावने।
व.ण मनोज हरेय, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

खंड घिरत चरु सार, रसना रंजन आनिये।
होय छुधा निरवार, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

दीप रतन मय ज्योति, कंचन भाजनमें धरें।
होय है ज्ञान उद्योत, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामी०

अगर कपूर मिलाय, धूप दहन शुभ कीजिये ।
अष्ट कर्म जरि जाय. पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ७ ॥
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम फल अति सार, नासा नेत्र सुहावने ।
होय मुक्ति भरतार, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ८ ॥
ओं ह्रीं श्रीभगवज्जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्घ अनूप बनाय, "रामचंद्र" वसु द्रव्यतें ।
होय मुकतिको राय, पुष्पदंत जिनवर जजे ॥ ९ ॥
ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतभगवज्जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचकल्याणक अर्घ ।

दोहा—फागुन नवमी कृष्ण ही, आरण स्वर्ग विहाय ।
रामादे उर अवतरे, जजं गर्भदिन ध्याय ॥ १ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णनवम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा० ।

अगहन सित प्रतिपद विषै, तीन ज्ञानजुत देव ।
जनमे हरि सुरगिरि जजे, जजूं मोक्ष हित एव ॥ २ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

सित प्रतिपद अगहन धर्यो, तप तजि राज्य महान ।
सुरनरखगपति पद जजे, जजिहूं तपकल्यान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं नि०

दोयज कार्तिक सुकल की, घातिकर्म हनि ज्ञान ।
लह्यो धर्म दुविधा कह्यो, जजिहूं ज्ञान कल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ।

भादव सित अष्टमि हने, सकलकर्म शिवथान ।
गये संमेदाचलथकी, जजिहूं मोछ कल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं भाद्रशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा०

## अथ जयमाल ।

दोहा ।

पुष्पदंतके विमल गुण, सकल सुखाकर पेख ।
सुमरि सुमरि वरनन करूं, करि करि हरष विशेष ॥ १ ॥

चाल—सीमंधर जिनवंदिस्यां जगसार हो ।

पुष्पदंत जिनवंदिस्या, जगसार हो काकंदी पुर थान ।
पिता नमूं सुग्रीवजी, जगसार हो, वंश इक्ष्वाकु महान ॥
महान वंश इक्ष्वाकुमें चय, स्वर्ग आरणतें भये ।
धन देवि रामा मातके उर, कृष्ण फागुनमें थये ॥
गर्भावतार कल्याण सुरपति. ठानि. सुरलोकें गये ।
जननी सु सेवा राखि धनपति, मास नव सुखसों गए ॥ २ ॥
अगहन सित प्रतिपद भली, जग० जनमें सुराधिप जानि ।

मेरु सुदर्शन ले गये, जग सार हो, छीरोदक शुभ आनि ॥
आनि जल अभिषेक करि फुनि, नृत्त तूर वजायये।
कहि पुष्पदंत पिता सु जननी, सौंपि मंगल गायये।
फुनि नृत्य तांडव हरी कीनों, कौन उपमा दीजये।
जन्म कल्याण उछाह मनमें, राखि नितही जीजिये ॥ ३ ॥
तन शशि सम धनु सत्त भलो, जग सारहो, आयु पूरव लखदोय
लख पूरव सुख भोगिकैं, जगसारहो, विरकत भयते होय।
होय विरकत सुकल परिवा, मास मगसिर वन गये।
नमः सिद्धेभ्यः कहि लौंच किनो, ध्यानमें प्रभु थिर भये।
हरि केश पंचम उदधि खेप, आय पद पूजा करी।
निःकर्म कल्यानक सुमहिमा, पुन्यकरता अघहरी ॥ ४ ॥
वरष चार वहु तप करे, जगसार हो, ध्यान अग्नि परजालि

कातिक सुदि दोयज भली, जगसार हो, घाति चतुक लहुबालि।
लहु बालि घाति उपाय केवल, लोक करवत पेखही।
समवादि सहित विहार करिकैं, लहो धर्म विसेखही।
तुम वचन अमृत पानतैं, उर दाह तत खिणही मिट्यो।
लखि ज्ञान कल्याणक सुमहिमा मोह तम मेरो फट्यो॥ ५॥
गणधर हरि मुनि थुति करी जगसार हो सो थुति उनस्यों होय।
धनि दिन यो धनि या घडी जगसार हो धनि धनि मो चखि दोय
मो चखि धनि तुम दरस देख्यो परसि पद धनि कर भये।
धनि धनि ये नत्र अंग मेरे ध्यान कर तुमको नये।
धनि भई रसना आज मेरी नाथ थुति तुम करनही।
धनि उभ पद तुम धाम आयो सबै कारज सरत ही॥ ६॥
निर अंबर सुंदर घने, जगसार हो दिग अंबर सुखदाय।

निराभरण तन अतिलसे, जगसार हो को रवि को शसि काय ॥
शसि काय लांछित अभ्रसम, दिन हीन वृद्धि सदा भमै ।
तुम चरण नखदुति कोट रवि ना, और उपमा को पमै ॥
दरसन ज्ञान चरित्र भूषण, देखि सिव तिय हो खुसी ।
आलिंग देने भई सनमुख, तुहे छवि लखि अति हसी ॥ ७ ॥
निरु आयुध निरभै घने जगसार हो कोप तणा नहीं लेश ।
मोह सुभट किम जय कियो, जगसार हो जुत परिवार महेश ॥
महेश हस्ती ध्यानपै संनाह, संजम अति छिमा '
प्रपलाय असुरन संग लागो, रही ना तसुकी जमा ॥
सो फेरि निकट न आवही, जुत समर स्वपनके विखें ।
हरि हरादिकके हिये, वासी करो जगके अखैं ॥ ८ ॥
तुम गुण गणपति मन धरे, जगसार हो ये वच कहे न जाय ।

ज्यों तारे सब गगनके जगसार हो, ये करमें न समाय ॥
करमें न तारे आय ज्यों, गुरु सहस रसना धार ही ।
वरनन कर तो पार पावै, रह्यो पौरष हार ही ॥
मैं बुधिविना थुति करन उमग्यो, होय कैसें नाथजी ।
शशिबिंब जलमें बाल विनु बुध, गहै किम गहि हाथजी ॥ ९ ॥
मैं विनवूं कर जोरिकें, जगसार हो, तुम गुणको नहिं बेव ।
इस भवमें बहु दुख सहा, जगसार हो, देहु अचल पद देव ॥
देव ! अचल पद देहु मोकूं, मरन चरणन की गही ।
करि 'रामचंद्र' लहंत सिव जो, गायसी सुर धरि सही ॥
इन होय मंगल नित नये, घर रिद्धि सिद्धि अनेक ही ।
अज्ञान तिमर विलाय तत्छिन, हिये होय विवेक ही ॥ १० ॥

घत्ता ।

अष्टमि सित भाद्र नाशि अघात्यं पुष्पदंत सिवनयर गये ।
सुर नर खग आये मंगल गाये गिरि समेद कल्याण थये ॥ १२ ॥

ओं ह्रीं श्रीपुष्पदंतजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीपुष्पदंतजिनपूजा समाप्ता ।

# अथ श्रीशीतलनाथपूजा ।

अडिल्ल ।

शीतल जुग क्रम नमूं धर्म दशधा इम भाख्यौ,
उतिम छिमा सु आदि अंत ब्रह्मचर्य सु आख्यौ ।
सुनि प्रतिबुध है भवि मोछि मारगकूं लागे,
आह्वानन विधि करूं चरण जुगकरि अनुरागे ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथभगवज्जिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

फल लेहि उचिम मिष्ट मोहन, लौंग श्रीफल आदि ही।
जिन चरण पूजै मुक्तिके फल, लहै अचल अनादि ही ॥भवि पूजि०॥

ओं ह्रीं शीतलनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध सुगंध तंदुल, पुष्प चरु अति दीप ही।
करि अर्घ धूप समेत फल ले, 'रामचंद्र' अनूप ही ॥ भवि पूजि० ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्रायाऽनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक अर्घ।

दोहा।

चैत्र कृष्ण अष्टमि चये, अच्युततैं भगवंत।
उदर सुनंदा अवतरे, जजूं मोक्षके कंत ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

कृष्ण द्वादसी माघकी, जनमें श्रीजिनराय।

उत्सव करि वासव जजे, मैं जाजि हूं जुग पाय ॥ २ ॥

ओं ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामी०

असित माघ द्वादसि तजी, तृणवत भूति महान ।

नगन दिगंबर वन वसे, जजूं दसम भगवान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

पौष चतुरदासि स्याम दी, शुकल ध्यान असि धारि ।

हने कर्म चउ घातिया, जजूं देव सुख तारि ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषकृष्णचतुर्दश्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

अष्टमि सित आसोजकी, गये मोक्ष भगवान ।

वसु विधि पद पंकज जजूं, मोहि देहु शिवथान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षकल्याणकमंडिताय श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

---

१ छन्द।

## अथ जयमाला।

दोहा।

सीतल तुम पद कमलजुग, नमूं सीस धरि हाथ।
भवदधि डूबत काढि मो, कर अवलंब दे हाथ ॥ १ ॥

चाल मंगलकी।

सीतल पद जुग नमूं उभेकर जोरिही।
भिदलापुर अवतरे अच्युतपद छोरिही ॥
दिढरथ तात विख्यात सुनंदा मायजी।
चैत कृष्ण वसु गर्भ लिये सुखदायजी ॥
सुखदाय गर्भकल्याण काजे आय सुरपति सब मिले।
जननी सुसेवा राखि धनपति आप सुरलोकें चले ॥
षटमास ले नवमास दिनमें वार त्रिप मणि वर्षपे।

गर्भ कल्याण महंत महिमा देखि सब जन हर्षये ॥ पू०
पूर्वापाढ नछित्र माघ वदि द्वादसी ।
जनमे श्रीजिननाथ नभोगण सब हंसी ॥
चतुरनिकाय मझारि घंटादि वजे भले ।
नये मौलि फुनि पीठ सवै हरिके चले ॥
चले पीठ अवधितैं जिन जन्म निश्चै हरि लखो ।
डगि सप्त चालि जुति ठानि वासव मेरु चलनेकूं अखो ॥
जिन लेय पांडुक वनविषैं अभिपेक करि पूजा करी ।
पित मात दे जन्मा कल्याणक ठानि थल चालो हरी ॥ ३ ॥
हेम वरण तन तुंग निवै धनुको सही ।
लछिन श्रीवछ आयु पूर्व लखकी कही ॥
नीति निपुण करि राज तजो तृणवत तवै । ६१

लौकांतिक सुर आय संबोधि चले सबै ॥
संबोधि आये माघ द्वादसि कृष्ण श्रीजिनवन गये ।
नमः सिद्धेभ्यः कहि लौंच कीनों उपाधि तजि कर मुनिभये ॥
सुर असुर नृपगण ठानि पूजा धवल मंगल गायही ।
निःकर्म कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पायही ॥ ४ ॥
षष्टमि धरि निज ध्यानविषैं प्रभु थिर भये ।
पूरन करि अनिकाज सेयपुरमें गये ॥
क्षीरदान जुत भक्ति पुनर्वसुजी दिये ।
हरिप देन आश्चर्य पंच ततखिणकिये ॥
किये आश्चर्य रत्न वर्षे अर्ध द्वादस कोडि ही ।
धरि ध्यान सुकल उपाय केवल घाति चारो तोडि ही ॥
चर अचर लोक अलोक जुगपति देखि सबही वर्निये ।

मुनि इंद्र ज्ञान कल्याण उत्सव पौषवदि चउदसि किये ॥ ५ ॥
योजन साढा सात लसै समवादिही ।
लखि मुनिमें गण देव इक्यासी आदिही ॥
पूरव सहस पचीस हीन वष तीन ही ।
विहरे केवल पाय आयु भई छीन ही ॥
भई छीन समेद गिरितें आश्वनी सित अष्टमि सही ।
असि ध्यान सुकल थकी अघाते हनै मुक्तितिया लही ।
सब इंद्र आय कियो महोत्सव मोक्ष मंगलगायही ॥
हूं नमूं सीतलनाथके पद अमल गुणगण ध्यायही ॥ ६ ॥
वसु खित वसु क्रम हानि बसे वसु गुणमई ।
ज्ञानावरणजघाति विश्व जान्यो सही ॥
देखो लोक अलोक हनै द्रशनावली ।

वेदनिको करि नाश अबाध भये वली ॥
फुनि वली सुद्ध चरित्रमें थिर मोह नाशथकी भये ।
अवगाह गुण छय आयुतें निरकाय नाम गये थये ॥
गुण अगुरलघु छय गोतके अंतराय छय वलनंत ही ।
सिध भये सीतलनाथजी तिरकाल वंदे संत ही ॥ ७ ॥
वसु गुण ये विवहार नियत अनंत ही ।
जाणै गणधरपै न वखानत अंतही ॥
ज्यों जलनिधि विस्तार कहैं करते इतों ।
वाल न मरम लहंत न जानत है कितो ॥
कितनो न जानैं उदधि है, जिम तुहे गुण वरणन करूं ।
मैं भक्तिवश वाचाल हूं कछु शंक मन नाहीं धरूं ॥
गुण देहु तेरी करूं विनती अहो सीतलनाथजी ।

"चंद्रराम" सरनि तिहारी आयो जोरि करिके हाथजी ॥ ८ ॥

दोहा।

सीतलके पद कमल जुग, त्रिविध नमूं सुख पाय।
भव दुख ताप मिटाययो, अहो दसम जिनराय ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति शीतलनाथजिनपूजा समाप्ता।

## अथ श्रीश्रेयांसनाथ पूजा।

---

अडिल्ल।

सभालोक मुनिधर्म अंग द्वादस श्रुतिसारे,
भये अनंदित सबै श्रेय जिन भवि बहु तारे।

प्रसमचित्त करि कोप हन्यो बंदू जुगकर ही,
आह्वानन विधि करूं चरण जुग हियमें धरही ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रेयांसनाथ जिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

मोतीदाम छंद ।

हिमन उद्भव स्वच्छ गंगोदकं कनक कुंभभरेन सुगंधिकं ।
जनम मृत्यु जरा क्षय कारणं । परिजजे शिरयांस पदाब्जकं ॥
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति०
अगर चंदन कुंकुम द्रव्यकं भ्रमर कोटि भ्रमांते सुगंधिना ।
प्रचुर दुख भवार्णव नाशनं परिजजे शिरयांस पदाब्जकं ॥२॥
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
सरल सालि अखंड मनोहरं लसत सोममरीचि समानकं ।

सुभग मौक्ष अखैपद कारनं परिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कुसुम ओघ कल्पतरु पावने, हरत चाक्षि सुगंध सुहावने ।
अशुभ काम मनोद्भवनाशनं परिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरस मोदक घेवर बावरं, लसत कांचन पात्र चरोत्तमं ।
प्रचुररोगक्षुधा निरनाशनं, परिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

कनत कांचन पात्र सुदीपकं, लसत जोति विवर्जित धूम्रही ।
अखिल मोह विध्वंसन कारनं, परिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं श्रेयांसनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

अगर कृस्न कपूर सुचंदनं, सुरभितागत षटपद वृंदही ।
निचय कर्म हुतासन जारनं, परिजजे शिरियांस पदाब्जकं ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

मधुर श्रीफल चारु इत्यादि ही, ललित गंध महारस अद्भुतं ।
अतुल सौख्य महाफलदायकं, परिजजे शिरियांस पदांबुजं ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सलिल गंध सु तंदुल पुष्पकं, चरु सु दीप सुधूप फलौघकं ।
परम मुक्ति सुथान प्रदायकं, परिजजे शिरियांस पदांबुजं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि०

अथ पंचकल्याणक

दोहा

पुष्पोत्तरतें चरि चये, विमला उर अवतार ।
षष्टी जेठ असेतही, लयो जजूं अवतार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

## अथ जयमाला ।

दोहा ।

श्रेय तणे पदकमल जुग, नमूं उभै करजोर ।
मधुर इदे भवतार तुम, हो निहचै नहिं ओर ॥ १ ॥

चाल पंचमंगलकी ।

जै जै जै शिरयांस नमूं सिरनायही, चय पुष्पोचरथकी सिंघपुर आयही
विमलाउरअवतारजेठवदिछठिलियो गर्भकल्याणकइंद्रसबैमिलिकेकियो
कीयो गरभ कल्याण सुरपति रुचिकवासिनिपति कह्यो ।
तुम करहु सेवा जननिकेरी छपन, सुन करि सुख लह्यो ॥
फुनि धनद वर्षः रतनकेरी मास नव पट लों करी ।
वा समै हिरदै बसहु मेरे धन्य दिन धनि वा घरी ॥ २ ॥

अरो दिसमित सहज अतिशै, लहे दस जिन जनमही।
तन हेम अरसी दंड आय, सुलाख चवरासी कही ॥
करि राज वरस विपाल लखही, त्यागि तृणवत वन गये।
सुर असुर फाल्गुण, कृष्ण, ग्यारसि, ठानि उत्सव सब नये ॥ ४
धरम चारित मन ज्ञान जिनेश्वर कूं भयो।
प्रथम पूरन ठानि अरिष्ठपुरमें गयो ॥
तहां दयो पयदान शाह नरनंद ही।
बरसे रतन अपार भयो सुख कंद ही ॥
सुखकंद वरस छमै करयो, तप घोर द्वादश विधि तदा।
असिध्यान सुकल धकी हने, घातघाति दुखद विधि जदा ॥
सुर असुर ज्ञान कल्याण पूजा, ठानि बहुथुति उचरी।
सो दोस पावन माघ मावस, सकल मंगलकी घरी ॥ ५ ॥

संभवै मागधिभाष सब जन, तोष षट रितु फल फलैं ।
सब सत्तु मैत्री अन अट्ठ दह, मुकरभू चुष चल चलैं ॥
जुतगंधवात गंधोदि बरषा, विमल नभ सुर जै करें ।
स्थित घात सोधें द्रव्य मंगल, कमल पद तल सुर धरें ॥ ७ ॥

इम गुण जुक्त जिनेस, विहरि भवि तारहीं ।
बरस लाख इकवीस, ज्ञान प्रभु धार हीं ॥
शेष रह्यो इक मास, समेदाचल ठये ।
हनि अघाति सिवथान, पूरण श्रावण गये ॥

गये श्रावण सुकल पूनिम, मोक्ष तव हरि आय हीं ।
वसुभेव पूजा ठानि उतसव, मोक्षमंगल गाय हीं ॥
सो मोक्षमंगल देहु मोकूं, श्रेयजुत श्रियनाथजी ।
'चंद राम' ध्यावें वंदि सतवे, जोरिकें जुग हाथजी ॥ ८ ॥

दोहा।

श्रेयतणे पद मो हिये, तिष्ठौं आठों जाम।
मो हिय श्रेयपदां विषै, रहो होय सिव ताम ॥ १६॥

ओं ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति श्रेयांसनाथजिनपूजा समाप्ता।

---

## अथ श्रीवासुपूज्यजिनपूजा।

रोला छंद।

वासपूजि जिन नमूं रतनत्रय सेखर धारयो।
द्वादस तप सिंगार वधूसिव दिष्टि निहारयो ॥
कंठालिंगन दैन लुब्ध ह्वै सनमुख आई।
आह्वाननाविधि करूं वारत्रय मनवचकाई ॥ १ ॥

१०२

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

अथ त्रिभंगी छंद।

छीरोदधि नीरं, निर्मल सीरं, मिश्रगंध सुभ भृंगभरं।
जिनवरपद सारं, जजि अविकारं, जनममृत्यु के दाहहरं॥
चंपापुर थानं, सुभ कल्यानं, वासुपूज्य जिनराज वरं।
वसुविधि करि अरचे, भव दुख विरचे, परचे सब सुख तास घरं॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सीतल चंदन, दाह निकंदन, केसर अगर कपूर घसौं॥
सुभ सौरभ आवे, मधुकर धावे, पूजि जिनेश्वर पाप नसौं॥ चंपा०॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सालि अखंडं, दुरित विहंडं, सोमसमा मनहर ल्यावैं।
श्रीजिनपद आगें, पुंज रचावैं, तुरत अखै पद भवि पावैं॥ चंपा०॥

१०६

शुभ श्रीफल ल्यावैं लौंग मिलावैं, पुंगी खारिक मनहारे।
श्रीजिनपद आगे, पूज रचावैं लहैं मुक्तिफल सुखकारे॥ चंपापुर०

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अति निर्मल नीरं गंध गहीरं, तंदुल पुष्प सु चरु लावैं।
पुनि दीपं धूपं फल सु अनूपं अर्घ "राम" करि गुण गावैं॥ चंपापुर०॥

ओं ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक।

दोहा।

महाशुक्रतैं चय लयो, श्यामा उर अवतार।
षष्ठी साढ असेत ही, जजूं भवार्णवतार॥१॥

ओं ह्रीं आषाढकृष्णषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा०॥

चउदसि फागुण कृष्ण ही, वासवजन्मकल्यान।
कीनों उत्सव करि महा, मैं जजि हूं धरि ध्यान॥

ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घं नि०॥

फाल्गुण चउदस स्यामही, लखि भव अनित असार।
राज त्यागि तप वन धरयो, जजूं चरन सुखकार॥३॥

ओं ह्रीं फागुणकृष्णचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

माघ सुकल द्वितिया हने, घाति करम धरि ध्यान।
कह्यो धर्म केवल भयो, जजूं ज्ञान कल्यान॥ ४॥

ओं ह्रीं माघशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि०॥

भादव चउदसि सुकलही, हनि अघाति भगवान।
लही मोक्ष सुखमय सदा, पूंजू मोक्षकल्यान॥ ५॥

ओं ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय अर्घं निर्व०॥

अथ जयमाला।

सोरठा।

अरुन वरन अविकार, वासुपूजि जिनकी छवी।
ध्याऊं भवदधि पार, देहु सुमति विनती करूं॥ १॥

अडिल्ल।

व सुपूजि जिनवने पंच कल्यानही चंपापुरमें भये नमूं धरि ध्यान ही।
षष्ठी स्याम असाढ़ गर्भ वि जयातने। महासुक्रतें आय जिनेश्वर ऊपने॥
फाल्गुण चतुर्दशि कृष्ण जन्म प्रभु को भयो तीनूं लोक मझारि महा आनंद थयो।
नंद मुकट फुनि पंडु सुरासुर के हले जन्म कल्याणक काज सबै वासव चले॥
ऐरावति पर लेजाय सनान कराय ही वासुपूजि धरि नाम पिता घर आय ही॥
भादव सुद चतुर्दशि दिनधारि करम्यो भूपदस्यो वसुदेव महा आनंद भयो
मर्वाि धनुष उतंग काय जिसमानु ही लाख बहत्तर आयु महिष चिह्न जानही
राज कर्यो चिरकाल महा सुख दायही सबै जिनेश्वर ज्ञानि भावना भायही

फाल्गुन चउदशि स्याम देवऋषि आयकैं ॥
पुष्पांजलि शुभ देय संबोधे ध्यायकैं ।
इंद्र सिंगार बनाय कल्याणक तप कर्यो ॥
पाडलतरुतल जाय जोग वनमें धर्यो ॥ ६ ॥
मनपरजै भयो ज्ञान ततच्छिन ही जबै ।
षष्टम पूरण ठानि असनहित जिन तबै ॥
पुर सिद्धारथ गये दान सुंदर दयो ।
बरषे रतन अपार हरष अति ही भयो ॥ ७ ॥
बरष एक छदमस्त विविधविध तप करे ।
ध्यान शुकल असिधकी घाति चउ जिन हरे ॥
उपज्यो केवलज्ञान उभै सित माघही ।
करी धर्मकी वृष्टि मिट्यो भवदाघ ही ॥ ८ ॥

विहरे आरज देश बोधि भविलोग ही ।
गये चंपापुर मांहि निरोध्यो जोग ही ॥
हनि अघाति सिवथान गये जिनराय ही ।
भादव सित चउदसी सुरासुर ध्यायही ॥ ९ ॥
मोक्षकल्याणक थान पूजि उतसव करयौ ।
मंगल गान उचारि महा आनंद धरयौ ॥
"रामचंद" कर जोरि नमैं करुणापती ।
मोकूं भवतें तारि अरज सुनियो इती ॥ १० ॥

घत्ता छंद ।

चंपापुर थानं, पंच कल्यानं सुरनरखगवंदत सबही ।
हूं पूजूं ध्याऊं गुणगण गाऊं, वासपूज्य दे सिव अबही ॥ ११ ॥

ओं ह्रीं श्रीवासपूज्यजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीवासपूज्यजिनपूजा समाप्ता ।

# अथ श्रीविमलनाथजिनपूजा।

रोला छंद।

परम सरूपी व्रती विवेकी ज्ञानी ध्यानी।
प्रानी हित उपदेश देय मिथ्यात जघानी।
सिद्धसुखभोगी विमल पाय वंदू जुग करकें,
आह्वानन विधि करूं त्रिविध त्रिपकार उचरिकें ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र। अत्रावतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

द्रुतविलंबित।

विमल सीतल सजल सुधारया, जनम मृत्यु जरा छय कारया।
सकल सौख्य विधानकनायकं, परिजजे विमलं चरणाब्जकं।१।





ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर कृष्ण कपूर सुकुंकुमं रिणित भृंगघटावलि गंधना ।
अखिल दुःख भवादिकनासनं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ २ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अछित उज्वल खंडन तीक्षणं । लसत चंद समान मनोहरं ॥
विगत दुःख सुथान सुदायकं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

कलप वृक्ष भवेन सुगंधना । कुसुम चारु हरै चखि पावनं ॥
प्रबलवाण मनोद्भव नाशनं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सरस मोदक मिष्ट मनोहरं । सुभग कांचन पात्र सुथापितं ॥
असम दुःख छुधादिविध्वंसनं । परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणि उद्योत महातम नाशनं। लसत दीप सुकांचन पात्रकं ॥
अखिल मोह विध्वंसन कारणं। परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ६ ॥
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर चंदनं धूप सुगंधिना। मधुप कोटि रवंत दिगालयं ॥
अशुभ कर्म महा दुठ जारनं। परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपक्वमिष्ट रसामृत पावनं। सुभग श्रीफल आदि फलौघकं ॥
परम मोक्ष महाफल दायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकं ॥ ८ ॥
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल गंध सुतंदुल पुष्पकं। चरु सुदीप सुधूप फलौघकं ॥
परम मुक्ति सुथान विधायकं। परिजजे विमलं चरणाब्जकं। ९।
ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा।

श्यामादे उर अवतरे, सहसरारतैं आय।
दशमी जेठ असेत ही, जजिहूं हरप उपाय ॥ १ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भकल्याणकाय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

माघ सुक्ल तिथ चौथिको, जनमे सुरपति आय।
सुर गिरि सनपन कारि जजे, मैं जजिहूं गुण गाय।२।

ओं ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

तज्यो राज कंपिला पुरी, श्रीजिनवर वन जाय।
चौथि माघ सित तप धर्यो, जजि हूं तूर वजाय ॥ ३

ओं ह्रीं माघशुक्लचतुर्थ्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

माघ शुकल षष्ठी विषे, हने घातिया जान।
कह्यो धर्म केवलि भये, जजहूं ज्ञानकल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लषष्ठ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०

अष्टमि साढ असेत हो, हने अघाति शिवथान।
गये विमल सुर नर जजे, जाजि हूं मोक्ष कल्यान॥

ओं ह्रीं आषाढकृष्णाष्टम्यां मोक्षकल्याणमंडिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०॥

अथ जयमाला।

दोहा।

विमल विमल मति दीजिये, हो करुणापति मोहि।
करूं वीनती जोरि कर, नमूं नमूं पद तोहि॥ १॥

( अहो जगत गुरु देवकी चाल )

अहो विमल जिन देव, सुनिज्यो अरज हमारी।
इह संसार मझारि, और न सरनि निहारी॥ १॥

मुनिप हरि हर देव, काल सबै ही खाये ।
उनको सरनो कौन, आपुनही थिर धाये ॥ २ ॥
तुम निरभै तजि मोह, ध्यान शुक्ल प्रभु ध्यायो ।
उपन्यो केवल ज्ञान, लोकालोक लखायो ॥ ॥ ३ ॥
समवसरनकी भूति, दोष पातैं लखि भागे ।
सुपनन तो ढिग धाय, असुरनके संग लागे ॥ ४ ॥
धरो जनम नहिं फेरि, मरन नहिं निद्रा नासी ।
रोग नाहि नहिं शोक, मोहकी तोरी फांसी ॥ ५ ॥
विस्मयको नहिं लेश, धीर भयप्रकृति विदारी ।
जरा नाहिं नहिं खेद, पसेव न चिंता टारी ॥ ६ ॥
मद नाहीं नहिं वैर, विषय नहिं रति नहिं कातैं ।
प्यास हनी हनि भूख, अष्टदश दोष न पातैं ॥ ७ ॥

नमूं सीस धरि हाथ, ख्यात देवनके देवा।
छ्यालीस गुण भंडार· करूं प्रभु तेरी सेवा ॥ ८ ॥
नमूं दिगंबर रूप, नमूं लखि निश्चल आसन।
मुद्रा शांति निहारि, नमूं नमि हूं तुम शासन ॥ ९ ॥
नमू कृपानिधि तोहि, नमू जगकरता थे ही।
असरन कूं तुम सरन, हरो भवके दुख ये ही ॥ १० ॥
जामन मरन वियोग, सोग इत्यादि घनेरे ।
फेरिन आवें निकट, करो प्रभु ऐसी मेरे ॥ ११ ॥
तुम लखि दीन दयाल, सरनि हम यातें आये।
ऐसे देव निहारि, भागितें तुम प्रभु पाये ॥ १२ ॥
" रामचंद " कर जोरि, अरज करि है जिन ऐसी।
विपति यहै जग मांहि, सबै तुम जानत तैसी ॥ १३ ॥

पातैं कहनी नांहिं, हरो जिन साहिब मेरे ।
विन कारन जग बंधु, तुही अनमतलब केरे ॥ १४ ॥
सरन गहेकी लाज, राखि जगपति जिन स्वामी ।
करुणा करि संसार, विमल जिन अंतर जामी ॥ १५ ॥
दोहा—विनती विमल जिनेशकी, जो पढिसी मन लाय ।
जनम जनमके पाप सब, ततछिन जाय पलाय ॥ १६ ॥

ओं ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ विमलनाथजिनपूजा समाप्ता ।

## अथ श्रीअनंतनाथजिनपूजा ।

अडिल ।

बाह्य अभ्यंतर त्यागि परिग्रह जति भये ।
बहुजन हित शिवपंथ दिखायो हरि नये ॥

ऐसे अनंत जिनेश, पाय नमि हूं सदा ।
आह्वाननविधि करूं त्रिविध करिकैं मुदा ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

नाराच छंद ।

क्षीर नीर हीर गौर सोम शीत धारया,
मिश्र गंध रत्न भृंग पाप नाश कारया ॥
अनंतनाथ पाय सेव मोक्ष सौख्य दाय है ।
अनंत काल अघज्वाल पूजतैं नशाय है ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुंकमादि चंदनादि गंध शीत कारया ।
संभवेन अंतकेन भूरि ताप हारया ॥ अनंतनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्वेत इंदु कुंद हार खंड ना अखित्तही ।
दुर्ति खंडकार पुंज धारिये पवित्त ही ॥ अनंतनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्रायाक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

सरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण ल्यावही ।
गंध लुब्ध भृंगवृंद शब्द धारि आव ही ॥ अनंतनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोदकादि घेवरादि मिष्ट स्वादसार ही ।
हेम थाल धारि भव्य दुष्ट भूख टारही ॥ अनंतनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्न दीप तेज भान हेमपात्र धारिये ।
भवांधकार दुःखभार मूलतैं निवारिये ॥ अनंतनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

देवदारु कृष्ण सार चंदनादि ल्यावही।
दशांग धूप धूम्रगंध भृंगवृंद धाव ही॥ अनंतनाथ०॥
ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
श्रीफलादि खारिकादि हेमथालमें भरे।
मुष्ट मिष्ट गंधसार चक्खि नासिका हरे॥ अनंत नाथ०॥
ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पय।

सलिल शीत अति स्वच्छ घिस चंदन मलियागर।
तंदुल सोम समान पुष्प सुरतरुके ला वर॥
चरु उत्तम अति मिष्ट पुष्ट रसना मनभावन।
मणि दीपक तमहरन धूप कृष्नागर पावन॥
लहि फल उत्तम कणथाल भरि, अरघ रामचंद हम करें।

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

चैत अमावसि अरि हने, घातिकर्म दुखदाय ।
वरो धर्मकेवलि भये, जजूं चरण सुखदाय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

चैतअमावसि शिव गये, हनि अघाति भगवान ।
सुरनरखगपति मिलि जजें, जजहूं मोक्षकल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

अथ जयमाला ।

दोहा ।

काल अनंतानंत भव, जीव अनंतानंत ।
जिन उतपति व्यय ध्रुव कही, नमूऽनंत भगवंत ॥ १ ॥

मणि विष्टि अखय करि सुरगण पेखिकैं जी ॥ ७ ॥
धरि ध्यान सुकल तवजी, चउ घाति हनै जव जी,
सुर आय मिले सब ज्ञान कल्याण ही जी ।
वदि चैत अमावसिजी, जखि भक्ति तुहै वासिजी,
समवादि रच्यो तसु उपमा भी नहीं जी ।
समवादि जिते भविजी, सुनि धर्म तिरे सब जी,
प्रभु आयु रही जब मास तणी तबै जी ।
संमेद पधारे जी, सब जोग संघारे जी ॥
समभाव विथारि वरी शिवतिय जबैजी ॥ ९ ॥
वसु गुण जुत भूपितजी, भव छारि बसे तितजी,
सुख मगन भये जित मावस चैतकीजी ।
सुर सब मिलि आयेजी, शिव मंगल गायेजी,
बहु पुण्य उपाय चले तुम गुणत कीजी ॥ १० ॥

गुण वृंद तुम्हारे जी, बुध कौन उचारे जी,
गण देव निहारे पै वचना कँहै जी।
"चंद्राम" करै थुतिजी, वसु अंगथकी नुतिजी,
गुण पूरन यौं मति गर्भ तुहे लहैजी ॥ ११ ॥
प्रभु अरज हमारीजी, सुनिज्यो सुख कारीजी,
भवमें दुखभारी निवारौं हौ धणीजी।
तुम सरन सहाईजी, जगके सुख दाईजी।
शिवदे पितुमाई कहो कवलों घणीजी ॥ १२ ॥

घत्ता छंद।

हनि गुण गण सारं, अमल अपारं, जिन अनंत के हिय धरई।
हनि जरमरणावलि, नासिभवावलि। सिवसुंदरि तत छिन वरई ॥ १३॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मणि विष्टि अखय करि सुरगण पेखिकैं जी ॥ ७ ॥
धरि ध्यान सुकल तवजी, चउ घाति हने जब जी,
सुर आय मिले सब ज्ञान कल्याण ही जी ।
वदि चैत अमावसिजी, जखि भक्ति तुहे वासिजी,
समवादि रच्यौ तसु उपमा भी नहीं जी ।
समवादि जिते भविजी, सुनि धर्म तिरे सव जी,
प्रभु आयु रही जब मास तणी तवै जी ।
संमेद पधारे जी, सब जोग संघारे जी ॥
समभाव विथारि वरी शिवतिय जवैजी ॥ ९ ॥
वसु गुण जुत भूपितजी, भव छारि वसे तितजी,
सुख मगन भये जित मावस चैतकीजी ।
सुर सव मिलि आयेजी, शिव मंगल गायेजी,
वहु पुण्य उपाय चले तुम गुणत कीजी ॥ १० ॥

गुण वृंद तुम्हारे जी, बुध कौन उचारे जी,
गण देव निहारे पै वचना कहै जी।
"चंदराम" करै थुतिजी, तसु अंगथकी नुतिजी,
गुण पूरन यों मति मंद तुहे लहैजी ॥ ११ ॥
प्रभु अरज हमारीजी, सुनिज्यो सुख कारीजी,
भवमें दुखभारी निवारो हो धणीजी।
तुम सरन सहाईजी, जगके सुख दाईजी।
शिवदे पितुमाई कहो कवलों धणीजी ॥ १२ ॥

घत्ता छंद।

इति गुण गण सारं, अमल अपारं, जिन अनंत के हिय धरई।
हनि जरमरणावलि, नासिभवावलि। सिवसुंदरि तत छिन वरई ॥ १३॥

ओं ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

# अथ श्रीधर्मनाथजिनपूजा।

रोड़ाछंद।

सार दरब षट कहे पदारथ नव सुभ भाखे।
सप्त तत्त्व वरनये काय पंचासति आखे॥
दोरतीन धिति कही धर्मजिनवर वृषदायक।
आह्वानन विधि करूं प्रणमि त्रिविधा शिवनायक॥१॥

ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

छंद मत्तअवलिप्त कपोल छंद।

अति निर्मल शुचि नीर तीर्थ उद्भव भृंग धारे।
सीतल मिश्रित गंध सुरभित मधु झंकारे॥

जनम मृत्यु आताप दुरित दारिद दुख खंडन ।
जजूं चरण धरि भक्ति धर्म जिन सिवके मंडन ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृस्नागर कसमीरनीर घनसार सुचंदन ।
षटपद ओघ भमंत सुरभितें दाह निकंदन जनम०॥२॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सोम किरण समस्वेत सुद्ध डंडीर अखंडित ।
अति निर्मल चखि हरैं, सालि सुभ सौरभि मंडित ॥ जनम ॥३॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पंच वर्ण मय कुसुम कल्प तरुके मन भावैं ।
गंध लुब्ध मधु भ्रमै समरके बाण नसावे ॥ जनममृत्यु० ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

उज्वल ललित पवित्त कनक भाजन चरु धारे ।

मधुर घृत रस युक्त छुधा लखतैं निरवारै। जनममृत्यु० ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय निर्मित दीप कांति तम औघ विदारै।
विकसत ह्वै वरबोध स्वपर लखि गुण विस्तारै॥ जनममृत्यु० ॥६॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अगर कृस्न करपूर सुरभि चंदनके दाहन।
धूप निर्जरा करै हरै अघ ह्वै शिव गाहन ॥ जनममृत्यु० ॥ ७॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर तरुके फल भूरि कनक भाजन भरि पावन।
श्रीफल मिष्ट बदाम चक्षुनासामनभावन ॥ जनममृत्यु० ॥ ८॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प दीप चरु धूप मिलावै।
अर्घ 'रामचंद' करै मेलि फल शिवसुख पावै ॥

जनम मृत्यु आताप दुरित दारिद दुख खंडन ।
जजूं चरण धरि भक्ति धर्म जिन शिवके मंडन ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक ।

दोहा ।

सर्वारथ सिधितें चये, गर्भ सुमता सार ।
तेरसि सित वैशाखकी, लयो जजूं भवतार ॥ १ ॥
ओं ह्रीं वैशाखशुक्लत्रयोदश्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥
जनम माघ सुदि त्रोदशी, सुरपति लखि इत आय ।
सुरगिरि ले सनपनि जजे, मैं जजहूं गुण गाय ॥ २ ॥
ओं ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥
माघ सुकल तेरसि तज्यौ, तृणवत राज महान ।

धीर तप धन विषे, जजूं धर्म भगवान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथ जिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

पौष सुकल पूनिम हने, घाति कर्म लहि ज्ञान।

करी सकल विधि लोककी, जजूं बोध कल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषशुक्लपूर्णिमायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

जेष्ठ सुकल तिथि चौथि ही, हनि अघाति शिवथान।

गये समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

अथ जयमाला।

दोहा।

वंदूं श्री जिनधर्मके, पदनखमंडन भान।

ममता-रजनीहरन दिन, भवदधि तारन जान ॥ १ ॥

चौपाई।

सर्वारथिसिधतैं अहिमिंद, चय रतनागपूरी गुणवृंद।
पिता भानु गुणवंत अपार, मात सुव्रता गर्भ मझारि ॥ २ ॥
आये सित त्रेरसि वैसाख, नये मुकट हरिधरि अभिलाख।
चले सबै सुर जुतपरिवार, गर्भकल्याणक कीनों सार ॥ ३ ॥
पट नव मास थकी मणिविष्ट, वार तीन दिन माहीं सुष्ट।
करी धनद, सुरि छप्पन पाय, सेवै माताके सुखदाय ॥ ४ ॥
जनम माघ सुदि तेरसि भयो, तीन ज्ञानजुत अचरज थयो।
बाजे घंट सुमनकी विष्ट, इंद्र चले सब नुति करि इष्ट ॥ ५ ॥
माया शिशु धरि शची जिनंद, प्रदछिन दे लीने सानंद।
वासव नमि लीने दरपाय, चले मेरु पांडुक वन जाय ॥ ६ ॥
छीरोदधितैं जल सुभ लाय, सनपन करि भरमंगल गाय।
बाजे साढा बारा कोरि, जाति धुनै करि नृत्त वहोरि ॥ ७ ॥

पूजि पदांबुज पितु परलाय, तांडव निरत कियो सुरराय ।
धर्मनाथ कहि निजथल गये, बाल चंद्रसम बढते भये ॥८॥
तन कंचन धनु पन चालीस, आयु वरष लख दसकी ईस ।
पांच लाख मय कीनो राज, कछु कारन लखि धर्मजिहाज ॥९॥
तृणवत त्याग्यो भावन भाय, देव रिषी नय पूजे पाय ।
और सुरासुर खग अवनीस, सिवका ले धाये वन ईस ॥ १० ॥
कचलोंचत उपज्यो मनज्ञान, षष्टम धरि तिष्टे भगवान ।
तेरसि माघसुकल सुरराय, करचौ कल्याणक तप सुखदाय ॥ ११ ॥
वर्द्धमानपुर भोजन काज, गये दयो पय धर्मजिहाज ।
कोटि अर्धदादस मणि धार, भई विष्टि धरसेनि अगार ॥ १२ ॥
वरस एक तप दुर्द्धर धारि, पूनिम पोस ध्यान परजारि ।
भस्म घातिया कर वरवीर, केवल ज्ञान उपायो धीर ॥ १३ ॥

चरम अढाईलख उपदेस, भविजन भवतें तारि अ
एक मास इक आय जु रही, गिरसमेद पहुंचे प्रभु सही ॥ १४ ॥
जोगनिरोधि करे समभाव, हनि अघाति भये सिवराव ।
चतुर्निकाय देवता आय, उत्सव कीनों मंगल गाय ॥ १५ ॥
सो मंगल दे जिनपति मोहि, जोरि उभै कर विनवूं तोहि ।
जे चर अचर लोकत्रियमाहि । तुमतें परनति छानी नाहि ॥ १६ ॥
याते यापनकी सब वात । हो त्रिभुवनपति कर विख्यात ।
"रामचंद्र" विनवें प्रभु तोहि । धर्मनाथ जिन दे शिव मोहि ॥ ७॥

घत्ता छंद ।

इति श्रीजिनधर्मं गुणगणपरमं जोभवि मनवचतन गावे ।
लहि सुर सुखसारं अमल अपारं नर हुय सिव सुख लहु पावे ॥१८॥
ओं ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
इति धर्मनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १५ ॥

सुष्ट मिष्ट हेमथाल धारि भव्य स्वादि ही ॥ रोग सोग०॥५॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप जोतिको उद्योत धूम होत ना कदा।

रत्नथाल धारि भव्य मोहध्वांत है विदा ॥ रोग सोग० ॥६॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्र चंदनादि द्रव्य सार सर्व धार ही।

स्वर्ण धूप दानमें हुतास संग जार ही ॥ रोग सोग० ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

घोटकेन श्रीफलेन हेमथालमें भरें।

जिनेसके गुणोघ गाय सर्व एनकूं हरें ॥ रोग० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पय।

सरद इंदुसम अंबुतीर्थ उद्भव तृटहारी।

१ पाप।

चंदन दाह निकंद सालि शशितें दुति भारी ॥
सुर तरुके वर कुसुम मिष्ट चरु पावन धारें ।
दीप रतनमय जोति धूपतें मधु झंकारें ॥
फलदि फल उत्तम अरघ करि सुभ "रामचंद" कन थाल भरि ।
श्रीशांतिनाथके चरण जुग वसु विधि अरचैं भाव धरि ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंच कल्याणक ।

दोहा ।

सर्वारथ सिधितें चये, भाद्रव ससमि स्याम ।
ऐरादे उर अवतरे, जजूं गर्भ अभिराम ॥ १ ॥
ओं ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा० ॥
जेठ चतुरदसि कृस्नकी, जनमे श्रीभगवान ।

सनपन करि सुरपति जजे, मैं जज हूं धरि ध्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि॰ ॥

जेठ असित चउदसि धर्यौ, तप तजि राज महान ।
सुर नर खगपति पद जजैं, मैं जज हूं भगवान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति॰

पोस सुक्ल ग्यारसि हने, घाति कर्म दुखदाय ।
केवल लहि वृष भाखियौ, जजूं शांति पद ध्याय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं पौषशुक्लैकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि॰ ।

कृस्न चतुरदसि जेठकी, हनि अघाति सिवथान ।
गये समेदाचल थकी, जजूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीशांतिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व॰ ॥

———:०:———

अथ जयमाला ।

सोरठा ।

शांति जिनेश्वर पाय, वंदूं मन वच कायतें ।
वंदूं सुगति जिनराय, ज्यों विनती रुचिसों करों ॥ १ ॥

चाल-धमार सावणियां पाई होलिनों ।

शांति करम वसुहानिकें, सिद्ध भये सिव जाय ।
शांति करो सब लोककों, अरज यहै सुखदाय ॥
सांति करो जगशांतिजी ॥ १ ॥

धन्य नगरि हथनापुरी, धन्य पिता विश्वसेन ।
धन्य उदर अयरा सती, सांति भये सुख देन ॥ सांति० ॥ २ ॥

भादव सातमि श्यामही, गर्भकल्याणक ठानि ।
रतन धनद वरषाइये, पट नव मास महान ॥ सांति० ॥ ३ ॥

जेठ असित चउदस विषै, जनम कल्याणक इंद ।
मेरु कर्यौ अभिषेककैं, पूजि नचे सुरवृंद ॥ सांति० ॥ ४ ॥
हेम वरन तन सोहनो, तुंग धनुष, चालीस ।
आयुवरसलख नरपती, सेवत सहस बतीस ॥ शांति० ॥ ५ ॥
षटखंड नवनिधि तिपसवैं, चउदह रतन भंडार ।
बहुकारण लखिकैं तजे, पणत्त अमिय अगार ॥ सांति० ॥६॥
देव रिषी सब आयकैं, पूजि चले जिन बोधि ।
लेय सुरां सिवका धरी, चिरछ नंदीस्वर सोधि ॥ सांति० ॥ ७ ॥
कृष्ण चतुरदसि जेठकी, मनपरजै लहि ज्ञान ।
इंद कल्याणक तप कर्यौ, ध्यान धर्यौ भगवान ॥ सांति० ८॥
पष्टम करि दित असनकैं, पुर सोमनस मझार ।
गये दयो पय मित्रजी, बरषे रतन अपार ॥ सांति० ॥ ९ ॥

सोलवरस दिन वसु दुगुणही, वरस करे तप ध्यान।
पोस सुकल ग्यारसि दिनै, घाति लह्यौ प्रभु ज्ञान॥ सांति०॥१०॥
समवसरन धनपति रच्यौ, कमलासनपर देव।
इंद्र नरा पटखण्डपती, मुनि थिति थुति करि एव॥सांति०॥११॥
धन्य जुगलपद मो तनौ, आयो तुम दरबार।
धन्य उभै चख ये भये, वदन जिनंद निहारि॥ सांति०॥ १२॥
आज सफल कर ये भये, पूजत श्रीजिन पाय।
सीस सफल अब ही भयो, धोक्यो तुम प्रभु आय॥सांति० १३॥
आज सफल रसना भई, तुम गुणगान करंत।
धन्य भयो हिय मो तनौ, प्रभुपदध्यान धरंत॥ सांति०॥ १४॥
आज सफल जुग मो तनौ, श्रवन सुनत तुमवैन।
धन्य भये वसु अंग ये, नमत लयो अति चैन॥ सांति०॥१५॥

राम कहै तुम गुणतणा, इंद लहै नहीं पार ।
मैं मति अलप अजान हूं, होय नहीं विसतार ॥ सांति० ॥१६॥
पाप सहस पचीसही, षोडस कम उपदेस ।
देय समेद पधारिये, मास रहे इक सेस ॥ सांति० ॥ १७ ॥
जेठ असित चउदसि गये, हनि अघाति सिवथान ।
सुरपति उत्सव अति करे, मंगल मोछि कल्यान ॥ सांति० ॥ १८॥
सेवक अरज करै सुनो, हो करुणानिधि देव ।
दुखमय भवदधि तें मुझे, तारि करूं तुम सेव ॥ सांति० ॥ १९ ॥

घत्ता छंद ।

इति जिन गुणमाला, अमल रसाला जो भविजन कंठै धरई ।
हुय दिवि अमरेस्वर, पुदपि नरेस्वर, शिवसुंदरि ततछिन वरई ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीशांतिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १६ ॥

# अथ श्रीकुंथुनाथ जिनपूजा ।

अडिल ।

जे परसंसा करैं राग तासौं नहीं, करै विरोध न दुष्टथकी दुख ना कही ।
सुद्धातममें लीन कुंथु जिनकूं नमूं, आह्वान विधि ठानि सवै अघकूं वमूं ॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्र अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्र । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

त्रिभंगी छंद ।

अति आमय दुसतरतैं तृद थावै, दुख पावैं अतिही भारी ।
तिसनासन कारन पूजन आयो, तीरथको जल भरि झारी ॥
श्रीकुंथु जिनेश्वर आपनसे चर, लखि पोपे पद धरि करुना ।
मैं काल अनंत अकाज गुमायो, अब तारौ तुम पद सरना ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भवमाहित भ्रमतैं दाह भयो मुझ, छिनसुख नाहीं का वरना।
घसि कुंकुम चंदन दाह निकंदन, पूजन ल्यायो हरि सरना ॥ श्री कुंथु०
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥
इह संसार अपार उदधिकूं, तारन भक्ति तुम्हा नवका।
सित तंदुल ल्यावैं पुंज बनावैं लहु पावैं ते सुख सिवका ॥ श्री कुंथु०॥
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥
सुर असुर विद्याधर हरिहर प्रतिहर, भ्रष्ट मदन कीने।
सुरतरुके कुसुमन की पद पूजूं, हरो समर इन दुख दीने ॥ श्रीकुंथु०॥
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
दोष आठारा यातैं होवैं, क्षुधा तृपाति ना नित खातैं।
सद घेवर मोदक पूजन ल्यायो, हरो वेदनादुख यातैं ॥ श्रीकुंथु० ॥५॥
ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥
मोह महातम छाय रह्यो मम, ज्ञान हर्यो अति दुख दीना।

अथ पंच कल्याणक।

दोहा।

दशमी श्रावण कृस्नही, तजि सरवारथ सिद्धि।
गर्भ लयो श्रीमातिउदर, जजूं देहु सिवरिद्धि ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपा०।

प्रतिपद सित वैसाख ही, जनम सुराधिप जानि।
उत्सव करि सुरगिरि जजे, मैं जज हूं भव हानि ॥ २ ॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

तज्यौ राज पट खंडको, तृणवत दिच्छा धारि।
परिवा सित वैशाखही, जजूं भवार्णव तारि ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

चैत सुकल त्रितिया हने, घाति करम लहि ज्ञान ॥

कह्यो धर्म सुनि भवि तिरे, जजहूं ज्ञानकल्यान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामी० ।

पड़िवा सित वैशाख ही, सकल कर्म हानि मोखि ।

गये समेदाचल थकी, जजूं चरण गुण घोखि ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

अथ जयमाला ।

दोहा ।

कुंथु जिनेस्वरके चरन, त्रिविध नमूं कर जोरि ।

धरि दिच्छा षट् कायकूं, पोखे षट्खंड छोरि ॥ १ ॥

चाल—त्रिभुवन गुरु स्वामीकी ।

जय कुंथ जिनेस्वरजी, वंदू परमेस्वरजी, सरवारथ सिद्धथकी, चय आइयेजी। श्रीमति उर थायेजी, नृप सूर्य सुहायेजी, वदि श्राव-

णदमयी मंगल गाइएजी, ॥२॥ वारणपुर थानाजी, हरि जन्म कल्याः नाजी, मिलि आए चैसास सुकल परिवा सवैजी। सुरागिरि ले आये जी. जल छीर सुल्यायेजी, अभिषेक सिंगार करी पूजा सवेजी॥ ३ ॥ फिर पितु ढिगल्यायेजी, नाचि तूर बजायेजी, लखि अंग न माये मात पिता सघेजी। तन कंचन सोहैजी, रवि कोटिक को है जी, धनुतुंग पैंतीस अजा लन्छन फवैजी ॥ ४ ॥ वय बाल विहाईजी, नृप पदवी पाईजी, सुभवक इत्यादि भंडार विषै भयेजी। षट् खंडके भूपाजी, चक्रधार अनूपाजी, सुर संग मझारि इत्यादि सबै जयेजी ॥ ५ ॥ नृप सेखर धाराजी, सेवैं पद साराजी, बत्तीस हजार तिया तिगुणी लहीजी। कछु कारण पायोजी, भव चंचल भायोजी, नवनिधि सिंगार विभो विषवत जही जी ॥ ६ ॥ लौकांतिक आयेजी, पद पुष्प चढाये जी, नुति कर थुति ठानि संबोधि घरां गयेजी। सिवका हरि कीनी

जी, मिलि कांधे लीनीजी, बन जाय तिलक तरु तलि ठये जी ॥७॥
सिंगार उतारेजी, सिर केस उपारेजी, नमः सिद्ध उचारि सुधातम ध्या-
इयांजी। वैशाख उजारेजी, परिग्रह तप धारेजी, तबही मन ज्ञान
जिनेश्वर पाइयोजी ॥८॥ पठन करि पूरोजी, भोजन दिन सूरोजी
पुर मंदिर धीर लखत भूपा धरेजी। घरदत्त निहारेजी, नमि तिष्ठ
उचारेजी, पयदान सुरा लखि पंचाचर करेजी ॥९॥ षोडस वर्ष ताईजी
करि तप अधिकाईजी, आतम लवलाय हने चउघातियाजी। केवल
लहि ज्ञानोजी, त्रैलोक्य बखान्योजी, मितितीज कल्यानों चैत सुरा
कियोजी ॥१०॥ सब आरज विहरेजी, भवितारि घनेरेजी, सब
आयु निवारि समेदाचल गयेजी। वैशाख सु प्रतिपदजी, अघाति करे
रदजी, तब मोक्ष महापद कुंथुजिना गयेजी ॥११॥ श्रीजिनवर
स्वामीजी, गुणपूरन धामीजी, करुनानिधि नामी अरज सुनो करूंजी।
भवबास महाबनजी, इसमें सुख ना छिनजी, बिन कारन ये जन बैरकरें

धरूंजी ॥ १२ ॥ तुम सरन सहाईजी, बिन कारन भाईजी, हो त्रिभुवन राई सरनि तुहे गहूंजी । गुणगण सब धारेजी· "रामचंद उचारेजी, हरि वैर हमारे सौख्य सदा लहूंजी ॥ १३ ॥

घत्ता ।

गुणगण अविकारं भवदधि तारं कुंथु जिनेस्वरके अमलं ।
सुर नर खग ध्यावैं सिवपद पावैं, " रामचंद " पद जजि कमलं ॥

ओं ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीकुंथुनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १७ ॥

## अथ श्रीअरनाथजिनपूजा ।

अडिल ।

तजि षट खंडभूरिद्ध जीर्ण तृणवत सबै ।
सुद्धातममें लीन भये अरजिन जबै ॥

ध्यानखड्गतें हनै करम वसु मैं नमूं।
आह्वानन विधि ठानि सर्व अघकूं वमूं॥ १॥

ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

गीता छंद।

सरद रितुके इंदुतें सित, तीर्थ उद्भव नीरही।
भरि भृंग मणिमय धार देवें, नसे त्रिविधा पीरही॥
अरनाथ दुस्तर हानि अरि, वसु मोह निरमे ह्वै गये।
सत इंद्र आय उछाह कीनों, जजूं पुलकित अंग ये॥ १॥

ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घनसार अगर मिलाय कुंकुम, घसत परिमल दिग मंदे।

चँचरीक शब्द करंत आवैं, पूजि जिन भवतप जहै ॥ अरनाथ० ॥२॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

सितसालि ससितैं खंड नाहीं, सरल दीरघ आनहीं ।
करि पुंज जिनवर चरन आगैं, लैहु अविचल थानहीं ॥ अरनाथ०॥

ओं ह्रीं श्री अरनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ कुसुम चारु अपार परिमल, कल्पतरुके पावने ।
चसि घ्राणहारी भरूं थारी, समरवाण नशावने ॥ अरनाथ० ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

वरखंड घृत पकवान सुंदर, स्वर्ण भाजनमें भरे ।
अति मिष्ट रसना भावने जिन पूजि रोग छुधा हरै ॥ अरनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मणि दीप जोति उद्योत अदभुत ध्वांत नासन भान ही ।

धरि कनकभाजन पूजि जिनपद लहैं केवलज्ञान ही ॥ अरनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

घनसार अगर दसांग धूप सु सुर्न धूपायनि भरैं ।
जिनचरण आगें खेय भविजन दुष्ट कर्म सबै जरैं ॥ अरनाथ० ॥७॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम श्रीफल दाख खारिक आदि फल बहु मिष्ट ही ।
भरि कनकथाल जिनाग्र धारैं लहैं सिव फल सुष्ट ही ॥ अरनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर नीर गंध सुगंध तंदुल पुष्प चरु अरु दीपहीं ।
करि अर्घ धूप फलार्घ लेकरि "रामचंद, अनूप ही ॥
अरनाथ दुस्तर हानि अरि वसु मोक्ष निरभै ह्वै गये ।
सत इंद्र आय उछाह कीनों जजूं पुलकित अंगये ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीअरनाथजिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये ,अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंच कल्याणक ।

दोहा ।

फागुण सुदि त्रितिया चये, अपराजिततैं इंद ।
उदर सुमित्रा अवतरे, जजूं देव गुण वृंद ॥ १ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणशुक्लतृतीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

अगहन चउदसि सुकल ही, जनमें जुत त्रय ज्ञान ।
हरि सनपन कर गिरि जजे, जजहूं जनम कल्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षचतुर्दश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपा०

मगसिर दसमी सुकल ही, पद् खंड राज महान ।
तृणवत तजि तप वन धर्यो, जजूं चरण धरि ध्यान ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

कार्तिक द्वादसि सुकल ही, घातिकर्म हनि ज्ञान ।

लह्यो धर्म दुविधा कह्यो, जजहूं ज्ञानकल्यान ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।
चैत्र अमावस सिव गये, सर्व कर्म हानि देव ।
चतुर निकाय सुरा जजे, मैं जजहूं वसु भव ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं चैत्रकृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

अथ जयमाला ।

दोहा ।

अर जिनके पद कमल जुग, वंदू सीस नवाय ।
देहु सुमति विनती रचूं, पढ़ें पाप नासि जाय ॥ १ ॥

( चाल—चंद्रप्रभु जिनध्याइयोंजी )

अर अराति वसु हानिके, सिवतियके पति थाय। सुख अनंत ता संग लहे,
वंदू गुण मन लाय, बुधहो, अर जिन ध्यावो भावसोंजी ॥ २ ॥

विहरि समेदा चलगये, आयुरही इक मास । जोगनिरोधि अघातिया,
हानि लीनो सिववास । बुधहो, अरजिन ध्यावो भावस्योंजी ॥ १५ ॥
अविनासी सुखमय लहो, ज्ञानरूप निरवाध । लखैकालभवकीसवैं,
परणति बोध अगाध, बुधहो अर जिन ध्यावो भावस्योंजी ॥ १६ ॥
तुम करुणानिधि जगपति, जगनायक भगवान । रामचंद विनतीकरै
द्यो मुझ अविचल ज्ञान । बुधहो, अरजिन ध्यावो भावस्योंजी ।
ध्यावत सिवपदवी लहै, नरपदकीकहाबात । भृत्य होय सुरपति चलै,
देखो फल अवदात, बुधहो अर जिन ध्यावो भावस्योंजी ॥ १८ ॥

घत्ताछंद ।

अर जिन गुण सारं, विबुध अपारं गावत अहनिसि मन धरई ।
तसु कीरतदेवा, खगनृपसेवा, ठानत उत्सव बहु करई ॥ १९ ॥

ओं ह्रीं श्रीं अरनाथजिनेंद्राय मह.र्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीअरजिनपूजा समाप्ता ॥ १८ ॥

# अथ श्रीमल्लिनाथजिनपूजा।

पाधरि।

मल्लि मनाद सजि सील मदन दुसतर हरयौ।
अनुप्रेक्षा सर संधि मोहभट जय करयौं ॥
प्रव्रज्या सिवका साजि वरांगन सिव वरी।
आह्वाननविधि करूं प्रणमि गुण हिय धरी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र। अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ : ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

नाराच छंद।

इंदु कुंद छीरतें अपार स्वेत वारही।
मिश्र गंध भृंग धारिके निकारि धारही ॥

अनेक गीत नृत्य तूर ठानिये विनोदस्यों।
अनर्घ द्रव्य ल्याय मल्लिनाथ पूजि मोदस्यों ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
गंध चंदनादि ले भवादि दाहकूं हरे।
सरद है सनेह उस्न बूंद एक जो परे ॥ अनेक० ॥ २ ॥
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
राय भोग्यके मनोग्य तंदुलौघ सारही।
सरल चित्तहार स्वेत पुंज भव्य धारही ॥ अनेक० ॥
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
सुरोपुनीत पुष्पसार पंच वर्ण ल्याइये।
जिनेंद्र अग्र धारिकैं मनोजकूं नसाइये ॥ अनेक० ॥४॥
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
मोदकादि घेवरादि घृत खंडतें करें।

स्वर्न थाल धारतें छुध्यादि रोगकूं हरें ॥ अनेक० ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रत्न दीप तेज भान हेम थालमें भरें ।
जिनेंद्र अग्र धारि भव्य मोह ध्वांतकूं हरें ॥ अनेक० ॥ ६ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दसांग धूप चंदनादि स्वर्न पात्रमें भरें ।
हुतास संग धारि कर्म ओघ भव्यके जरें ॥ अनेक० ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मिष्ट सुष्ठ श्रीफलादि घ्राण चक्षिकूं हरें ।
मनोग्य चित्तहार पूज जोग्य थालमें भरें ॥ अनेक० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

छप्पय ।

सलिल सुच्छ सुभ गंध मलयतें मधु झंकारे ।
तंदुल शशितें स्वेत कुसुम परिमल विस्तारे ॥

छुधा हरन नैवेद रतन दीपक तम नासै।
धूप दहै वसु कर्म मोख मग फल परकासै॥
इम अर्घ करौं सुभ द्रव्य लै, रामचंद कन थाल भरि॥
श्रीमल्लिनाथके चरण जुग, वसु विधि अरचैं भाव धरि॥ १॥
ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचकल्याणक।

दोहा।

चैत सुकल प्रतिपद चये, अपराजिततैं इंद।
प्रजावती उर अवतरे, जजूं मल्लि गुणवृंद॥ १॥
ओं ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०।
अगहन सुदि एकादसी, सुरपति चतुरनिकाय।
सुरगिरि सनपन करि जजे, मैं जजहूं गुणगाय॥ २॥
ओं ह्रीं मार्गशुक्लैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति०।

भवभय करि तृणवत तज्यो, जगतराज धरधीर ।
सित अगहन एकादशी, जजूं धर्यो तप वीर ॥ ३ ॥
ओं ह्रीं मार्गशुक्लैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ।
पौष कृस्न दोयज हने, घातिकर्म दुखदाय ।
केवल लै वृष भाखियो, जजूं ज्ञान गुणगाय ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं पौषकृष्णद्वितीयायां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामी० ।
फागुण पंचमि सुकलही, शेष कर्म हनि मोख ।
गये समेदाचल थकी, सिवहित पद गुण घोख ॥ ५॥
ओं ह्रीं फाल्गुणशुक्लपंचम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

वालपनै मल्लिनाथजी, विषय अरनि दुखकार ।
प्रगट भस्म तप अग्नितैं, करैं नमूं पद सार ॥ १ ॥

पद्धरि छंद।

जय तीन जगतपति मल्लिदेव। भव उदधितार तुम सरन एव॥
जय धर्मतीर्थ करता जिनेस। जगबंधु विना कारन महेस॥ २॥
जय तीर्थराज किरपानिधान। जय मुक्तरमा-भरता सुजान॥
जय स्वयंबुद्ध संभू महान। जय ज्ञानचाक्षि करि विश्व जान॥ ३॥
जय स्वपर हितू मदमोह सूर। दिक्षा कृपाण गहि तुरत चूर॥
जय तेरह चारित अमल धार। हत राग द्वेष वय अति कुमार॥४॥
तुम ज्ञानपोत लहि भवि अनेक। भवसिंधु तरे संसय न एक॥
तुम वचनामृत तीरथ महान। ह्वै पावन जे करि हैं सनान॥ ५॥
दुःकर्म पंक छिन ना रहाय। तुम वैन मेघ करिकैं जिनाय॥
तुम ज्ञान भान करिकैं महेस। ह्वै तिमर मोहको छय असेस॥ ६॥
सिवपंथ भव्य निर्विघ्न जाय। तेरी सहाय निर्वान पाय॥

बहु जोगीस्वर तुम सरन थाय । निर्वान गए जासी अघाय ॥ ७ ॥
जय दर्शन ज्ञान चरित्त ईस । धर्मोपदेस–दाता महीस ॥
जय भव्यनिकर तारन जिहाज । भवसिंधु प्रचुर तुम नाम पाज ॥८॥
त्वं नाम मंत्र जो चित धरेय । सर्वारथसिधि सिवसौख्य लेय ॥
मैं विनऊं त्रिविधा जोरि हाथ । मुझ देहु अछैपद मल्लिनाथ ॥ ९ ॥

घत्ता छंद ।

श्रीमल्लि जिनेस्वर नमत सुरेस्वर, वसुविधि करि जुग पद चरचै ॥
दुह जर मरणावलि नसै भवावलि, रामचंद सिवतिय परचै ॥ १० ॥

ओं ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीमल्लिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १९ ॥

——००——

# अथ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनपूजा।

अडिल्ल।

सकल परीसे जीति ध्यान असितें हने,
पाति चतुक लहि ज्ञान भव्य बोधे घने।
मुनिसुव्रत जिन पाय नमूं सिर नायकें,
आह्वानन विधि करूं चरण ढिग आयकें॥ १॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्र! अत्र अवतर अवतर। संवौषट्।
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः।
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

चाल जोगीरासा।

इंदु सरद रितु का अँगतें सित, मुनि चित सम अविकारी।
सीत सुगंध तृट परसत नासै, तीर्थोदक भरि झारी॥

मुनिसुव्रत जिनके पद पूंजे, दोप दुगुणनव नासै।
लोक सकल कर रेख ज्यों देखे, ऐसो ज्ञान प्रकासे ॥ १ ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घासि मलियागर कुंकुमके सँग कृस्नागर घनसारं।
दाहनिकंदन परिमलतें अलि, धावत वृंद अपारं ॥मुनिसुव्रत० ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद किरन सम उज्जल दीरघ, मनरंजन अनियारे।
तंदुल ओघ अखंडित लेकरि, पुंज करों द्रिग हारे ॥ मुनिसुव्रत० ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुम मनोहर पंच वरण ही, सुरतरुके सुभ ल्यावें।
गंध सुगंधे घ्राणहि रंजन, गुंजत षटपद आवें ॥ मुनिसुव्रत० ॥
ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक गूंजा घेवर फेनी, सुरही घृत बनावें।

नगन दिगंबर वन वसे, जजूं चरण जुत राग ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ।

नौमी वदि वैसाखही, हने घाति दुखदाय ।
कह्यौ धर्म केवलि भये, जजूं चरण गुनगाय ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं नि० ।

फागुण द्वादसि कृस्नही, हनि अघाति निरवाण ।
गये सुरासुर पद जजे, जज हूं मोक्षकल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं फाल्गुणकृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेंद्राय अर्घं निर्व० ॥

अथ जयमाला ।

दोहा ।

श्रीमुनिसुव्रत जिनतने, नमू जुगल पद सार ।
भवदधि तारनतरनहो, पतित उधारनहार ॥ १ ॥

चाल–सीमंधरजिनवंदिस्यां जगसारहो।

मुनिसुव्रत जिनवंदिस्यां जगसारहो, नगर कुसागरभूप।
पिता नमूं सुहमित्तजी जगसारहो, श्रीहरिवंस अनूप ॥
अनूप श्रावण बीजकारी सुरग प्राणतैं चये।
तब मात स्यामा गर्भ आये लोकत्रयमें सुख भये ॥
सुर असुरके नय मुकट कंपे पीठ सब हरि आयही।
गर्भकल्यान महंत महिमा ठानि मंगल गायही ॥ १ ॥

पटनवमास त्रिकालकी जगसारहो, वरषे रतन अपार।
वदि दसमी वैसाखकी जगसारहो, जिनजनमें तिहँवार ॥
तिहवार घंटा आदि बाजे, सबै सुर मिलि आयही।
जिन लेय पांडुक वन नह्वाये, खीर जल सुभल्यायही ॥
सिंगार करि पितु मात सौंपे, नृत्य तांडव हरि करयो।
लखि हर्दै हरषित भये दंपति, नाम मुनिसुव्रत धरयो ॥२॥

स्याम वरण तन तुंग है, जगमारहो, चीस धनुप परिमान।
तीस सहस नृप आयु है जगमारहो, कछलांछिनसुभजान॥
सुभराजपद दससहस कीनो त्यागि तृणवत वन गये।
नमः सिद्धेभ्यः कहि लोंच कीनो, ध्यानमें प्रभु थिर थये॥
तबही भयो मनज्ञान सुरनर पूजि पद गुण गाइये।
वैसाख दसमी कृष्ण चंपकवृक्षतलि व्रत भाइये॥ ३॥
करि पारण मिथुला गये जगसार हो, भोजन हित जिनराय।
विश्वसेननृपजी दयो जगसार हो, पय लखि सुर हरपाय॥
हरपाय सुर आश्चर्य कीनो पंचफिरि वन जाय ही।
तप करे ग्यारा वरप द्वादस भांति निरभै थाय ही॥
वैसाख नवमी कृष्ण हरिये घाति चउ धरि ध्यान ही।
लहि ज्ञान लोक अलोक पेख्यो, भयो बोध कल्यान ही॥४॥

समोसरन धनपति रच्यो जगसार हो, मानसथंभत्रिसाल।
चउ चउ गोपुर सोहने जगसार हो, खाई सजल मराल ॥
मराल वन वन कल्पतरु फुनि चैत चंपक अंवही।
धुज सैल सरित सतूप सुर तिय नचै हलत नितंव ही ॥
मधि सभा द्वादस सभामंडप कमल आसन जिन ठये।
चतु वक्त्र अंगुल च्यारि अंतर भई धुनि सुनि हरषये ॥ ५ ॥
तरु असोक त्रिय छत्र हैं, जगसार हो, चवसठि चवर ढुरंत।
जोजन वानी मागधी जगसारहो दुंदुभि मधुर घुरंत ॥
घुरंत दुंदभि सुमन वरषै तुंग आसन त्रिय लसै।
तमपटल भामंडल विध्वंसै कोटिरविकी छवि नसै ॥
वसु प्रातिहारिज सहित आरिज देसके भवि वोधि ही।
संमेदगिरि समभाव प्रणये भूरि जोग निरोधिही ॥ ६ ॥

फागुण द्वादसि कृस्नही जगपारहो, ध्यान सुकल असि धार।
हनि अघाति सिवपुर लयो जगसारहो सुख अनंत भंडार॥
भंडार सुख अविकार अवपु सु हीनवृद्ध नहीं कदा।
त्रैलोककी तिरकाल परणति ज्ञान गर्भित है सदा॥
तित जनम मरन जरा न व्यापे नांहि सेवक भूपही।
चिद्रूप वसुगुणमयी राजै सदा एक सरूप ही॥ ७॥

तुम गुण सु गुरु वरनवै जगसार हो, जिह्वा सहस बनाय।
तोऊ पार लहै नहीं जगसार हो, तो हम पैं किम थाय॥
किम थाय हमपै तुहे वरनन देवगुरु से थकि रहे।
हो कृपानाथ अनाथके पति इहै भव दुख मैं सहे॥
तुम तरण तारण दुखनिवारण तारि भवतें नाथजी।
"चंदराम,, सरनि निहारि आयो जोरिकें जुग हाथजी॥

दोहा ।

श्री मुनिसुव्रत देवकी, विनती परम रसाल ।
जो पढसी सुनिसी सदा, पासी मोक्ष विसाल ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनपूजा समाप्ता ॥ २० ॥

## अथ श्रीनामिनाथ जिनपूजा ।

अडिल ।

सुकल ध्यान पर जालि भस्म करि घाति ही,
केवलज्ञान उपाय धर्म कहि ख्याति ही ।
सुनि प्रतिबुध भवि भये नमूं नमि पाय ही,
आह्वानन विधि करूं तिष्ट इत आयही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

गीताछंद ।

सरति गंगा हिमन परवत थकी पूरव धावही ।
भरत सनमुख होय नभतें परी कुंडमें आव ही ॥
सो नीर निरमल अतिहि सीतल त्रिपानासन लेय ही ।
नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमल गुणगण घेय ही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

उद्यान निरजन मांहि पन्नग, घाम दुखतें अति भमें ।
लखि मलयचंदन दाह कंदन, तासपै सुखतैं रमैं ॥
सो दारु प्रासुक नीरतें घसि, कनक भाजन लेय ही ॥ नमिनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सरद इंदु समान उज्वल गंधतें मधुकर भमें ।

सरल दीरघ नांहि खंडित, जोति मुक्ताकी दमें ॥
सो अखिन जलतें क्षालि भवि जन, उभे करमें लेय ही ॥नमिनाथ०॥
ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥
कनक मणिमय सुघर धरिये, पंचवरन सुहावने ।
जावत्रि आदि अनेक विधिही, अमर तरुके पावने ॥
सो कुसुम अद्‌भुत घ्राणहारी, लगे मधु कूं पेय ही ॥ नमि० ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
खंड घृत पकवान सुंदर, सद्य अनुपम मोहने ।
अति मिष्ट रसना हरें देखत, छुधा डायन कूं हनें ॥
सो सुष्ट मोदक चारु फेनी, स्वर्ण भाजन लेय ही ॥ नमि० ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
दीप मणिमय जोति सुंदर, धूमवर्जित ललित ही ।
तम मोह पटल विलाय ऐसें, पवन ज्यों घन चलत ही ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

गीताछंद ।

सरिता गंगा हिमन परवत थकी पूरव धावही ।
भरत सनमुख होय नभतैं परी कुंडमें आव ही ॥
सो नीर निरमल अतिहि सीतल त्रिषानासन लेय ही ।
नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमल गुणगण धेय ही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

उद्यान निरजन मांहि पन्नग, घाम दुखतैं अति भमैं ।
लखि मलयचंदन दाह कंदन, तासपै सुखतैं रमैं ॥
सो दारु प्रासुक नीरतैं घसि, कनक भाजन लेय ही ॥ नमिनाथ० ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सरद इंदु समान उज्वल गंधतैं मधुकर भमैं ।

सरल दीरघ नांहि खंडित, जोति मुक्ताकी दमें ॥
सो अखित जलतें क्षालि भवि जन, उमे करमें लेय ही ॥नमिनाथ०॥
ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥
कनक मणिमय सुघर धरिये, पंचवरन सुहावने ।
जावत्रि आदि अनेक विधिही, अमर तरुके पावने ॥
सो कुसुम अद्‌भुत घ्राणहारी, लगे मधु कूं पेय ही ॥ नमि० ॥ ४ ॥
ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
खंड घृत पकवान सुंदर, सद्य अनुपम मोहने ।
अति मिष्ट रसना हरें देखत, क्षुधा डायन कूं हनें ॥
सो सुष्ट मोदक चारु फेनी, स्वर्ण भाजन लेय ही ॥ नमि० ॥ ५ ॥
ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
दीप मणिमय जोति सुंदर, धूमवर्जित ललित ही ।
तम मोह पटल विलाय ऐसें, पवन ज्यों घन चलत ही ॥

सो कनक भाजन धारि भविजन, चविसकूं अति प्रेमही ॥ नमि० ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुभग धूप दसांग चूरन, स्वर्ण धूपायन भरै ।
तसु सुरभितैं मधु भमैं अतिही, दसौं दिसिमैं रव करै ॥
सो द्रव्य भविजन लेहि उत्तम, अगनिके संग खेय ही । नमि० ॥ ७ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

बादाम श्रीफल चारु पुंगी, आदि सुभ रलियावने ।
तसु गंधतैं है घ्राण रंजन, लखे चक्षि सुहावने ॥
कनथाल फलतैं भरो उत्तम, अमर तरुके लेय ही ॥ नमि० ॥ ८ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

विमल नीर सुगंध चंदन, अछित स्वेत उजासही ।
वर कुसुम चरुतैं छुधा नासै, दीपतैं तम नासही ॥
'रामचंद' हम अर्घ कीजे, धूप फल सुभ लेय ही ।

नमिनाथ जिनके चरण पूजूं अमल गुणगण धेय हीं ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंच कल्याणक।

दोहा।

अपराजिततैं हरि चये, विपुला उर अवतार।
दोयज स्याम असोजही, लयो जजूं भवतार ॥ १ ॥

ओं ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्व०।

दसमी असित असाढही, जनम सुराधिप जान।
सुर गिरि ले सनपन जजे, जजहूं जनम कल्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं आषाढकृष्णदशम्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

वदि अषाढ़ दसमी तज्यौ, जगतराज्य तप धार।
सुथिर भए निज ध्यानमें, जजूं चरण जुग सार ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं अषाढकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।



पृ०

मगसिर सुदि एकादसी, हने घातिया कर्म।
कह्यो धर्म केवलि भये, जजूं चरण नाशि भर्म ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामी०

चतुरदसी वैसाख वदि, हनि अघाति सिवथान।
गये समेदाचल थकी, जजहूं मोक्ष कल्यान ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं वैशाखकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीनमिनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०।

अथ जयमाला।

दोहा।

इंद्र नमत मणि मुकटकी, नेक न दुति दरसाय।
नमि जिन नखमंडलथकी, त्रिविध नमूं निजपाय ॥ १ ॥

पद्धरि छंद।

जय नमि जिनवरके जुगल पाय। प्रणमू मनवचतन सीसनाय।
अपराजित नाम विमान सार। चय आये मिथलापुर मझार ॥ २ ॥

विजयारथ तात इक्ष्वाकु वंस। विपुला देवी उर सहस अंस।
अस्वनि कुवार दोयज असेत। जिन गर्भ लयो हरि धारि हेत ॥३॥
आये कल्याण गरभादि काज। करि उत्सव चाले देवराज।
धनपति करि है तिरकाल विष्ट। पटमास आदि नव रत्न सुष्ट ॥४॥
जय जिन जनमे त्रय ज्ञान धार। आषाढ कृष्ण दसमी मझार।
आये सब चतुरनिकाय देव। निजनिज वाहन निज नारि एव ॥५॥
तब सची जाय परसूति थान। नमि गुप्त लये जिन तेज भान।
हरि नमसकार करि गोद लेय। सिर छत्र तीन ईसान देय ॥६॥
फुनि सनतकुमार महिंद इंद। सिर चवर करें सोभा अमंद।
सुरगिरि पांडुक वनमांहि जाय। अभिषेक कर्यो जल खीर लाय॥७॥
सचि पोंछि करें सिंगार सार। बहु तूर बजें तिन को न पार।
बहु विधि पूजा करि निरति ठानि। संतोषे मातपितादि आन ॥८॥

तनहेम धनुप पणदह उतंग । दस सहस वरपकी आयु चंग ।
करि राजतज्यौ भव भीत होय । भवभोग विनस्वर काय जोय ॥ ९॥
तवही लौकांतिक आय देव । संवोधि चले अतिठानि एव ।
सौधर्म आदि सुर खचर भूप । सिवका ले चाले वन अनूप ॥ १० ॥
तरु वकुल तलैं सिरकेस टारि । तजि उपाधि सुधातमध्यानधारि ।
आपाढ कृष्ण दसमी महान । इंद्रादि चले करि तप कल्यान ॥ ११ ॥
करि पष्टम नगरी सुजग मांहि । अन काज गये नृपदत्त लखांहि ।
पय दान दियो सुर भक्ति देख । आश्चर्य करे पण विधि विसेख॥ १२॥
नव मास महातप उग्र ठानि । धरि ध्यान सुकल चउघातिहानि ।
अगहन सित चउथि सुज्ञान भान । उपज्यौ सुर असुर कल्यान ठान
समवादि सहित करिकैं विहार । संमेद ठपे वहु भव्यतार ।
बैसाख कृष्ण चौदसि मझारि । सिववधू वरी सु अघाति जारि ॥१४॥

तब चतुरनिकायक देव आय । वसु भेव पूजि बहु पुनि उपाय ।
करि उत्सव मंगल मोच्छ ठान । निज थान गये करिके कल्यान ॥
जय सदा अमल गुण सहित धार । जे लोक बोधदर्पण मझार ॥
दर्शन सब जुगपत लखत भूप । बल अनँत काल ध्रुव एकरूप ॥१६॥
सुहमंत देस सूच्छम अपार । गुण अगुरलघू हल को न भार ॥
तन चर्म कछू अवगाह हीन । नहि आपय अव्याबाध चीन ॥ १७ ॥
गुण अष्ट इहें निहचें अनंत । को वर्नि सकें मुनिगादि संत ॥
मैं विनवूं श्रीनमिनाथ देव । मुझ देहु सदा तुम चरण सेव ॥ १८ ॥
हो कृपानाथ जगपति जगीस । तुम तारन तरन निहारि ईस ।
मैं सरनि गही मुझ तारि नाथ । "चंद राम" नमैं धरि सीस हाथ॥१९॥

घत्ता ।

इह नमि गुणमाला, परमरसाला, मन वच तन कंठै धरई ।

हुय सिद्ध निरंजन, भव दुख भंजन, अगणित सुख सिव मंग करहैं ॥

ओं ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीनमिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ २१ ॥

## अथ श्रीनेमिनाथजिनपूजा ।

अडिल्ल ।

घणे जंतु रव कर्‌यो नेमि सुनि गिरि गये,
तजि रजमति भव अनिति पेखि मुनिवर भये ।
ध्यान खडग गहि हने कर्म सिव तिय वरी,
आह्वानन विधि करूं प्रणमि गुण हिय धरी ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

छंद त्रिभंगी।

निर्मल ल्याय महातीर्थोदक, कनक रतनमय भरि झारी ।
मनवचतन शुध करि जिनपद पूजें, नसें जन्म मृति दुखकारी ॥
श्रीनेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, राजमति सी नवछिन छारी ।
पशुवनिकी रव सुनिके करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
शुभ कुंकुम ल्यावें अगर मिलावें, चंदनतें घनसार घसें ।
तसु परसि समीर चलै अति शीतल, महा दाह ततकाल नसे ।श्रीनेमि०
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
शुभ शालि अखंडित सौरभि मंडित, शशि सम उज्ज्वल अनियारे ।
शुभनखूं शोभत मुक्तासी दुति, पुंज करें भवि मनहारे ॥ श्रीनेमि० ॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
कुसुम मनोहर घ्राणनके हर, पंचवरन अति सुखकारी।

सुर तरुके पावन चखि ललचावन, अति मृदुतैं भवि भरि थारी।श्रीनेमि

ओं ह्रीं श्र नेमिनाथजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अति मिष्ट मनोहर घेवर फैनी, मोदक गूझा भरि थारी।

रसनाके रंजन रसके पूरे, छुधा निवारन बलकारी॥ श्रीनेमि०॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय छुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

दीप रतनमय जोत मनोहर, कनक रकाबीमें धारैं।

तम मोह नसै जिम पवनथकी घन, स्वपर लखै गुण विस्तारैं॥श्रीनेमि०

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुभ धूप दसांग हुतासनके संग, लै धूपायण मांहि भरैं।

तसु सौरभतैं मधु गुंजत आवैं, अष्टकर्म ततकाल जरैं॥ श्रीनेमि०॥

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

पूगी दाख बदाम छुहारा, एला श्रीफल जुत ल्यावैं।

जय दोष निराकृत धर्म घोख। भवतारक संभव करन मोख।
जय मोहन मूरति मिष्ट पाल। पितु मात पद्म रवि प्रातकाल॥ ५॥
वहु नृत्य ठानि पितु मातु देय। जय वृद्ध भये गिन राज हेय।
मिन श्रावण षष्ठी जंतु पेखि। भयभीत भये भवतैं विसाखि॥ ६॥
तप धारि तज्यौ परिगह पिसाच। नुनि सिद्धोंको करि त्याग वाच।
गहि ध्यान खडग चउघाति मार। लहि केवल मिवप्रतिपद कुआर। ७।
धन देव रच्यौ समवादिमार। जिन अंतरीक करिकैं विहार।
वन ग्राम नगर पुर सर्वदेस। कहि धर्म भव्य तारे महेस॥ ८॥
भवकूप इहै अघको भँडार। तिसमें दुख है सुख ना लगार।
तुम तारण विरद निहारि देव। मैं सरन गही मुझितारिदेव॥ ९॥
दिन सप्तमि सित आषाढ मोखि। जिन प्रकृति पिचासी सेप सोखि।
गिरनारि सिखर निर्वाण थान। चंदराम नेम नित धारि ध्यान॥१०॥

मम मोह निविड विध्वंस कारण, लेय जिनगृह आयही ॥ श्रीपार्श्व॰

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीखंड अगर दसांग धूप, सु कनक धूपायनि भरैं ।
आमोदतैं अलिवृंद आवैं, गूंजतैं मनकूं हरैं ।
वसु कर्म दुष्ट विध्वंस कारण, अग्निसंग जराय ही ॥ श्रीपार्श्व॰ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अति मिष्ट पक मनोग्य पावन, चखित घ्राणनकूं हरै ।
अलि गुंज करत सुगंध सेती, सुधाकी सरभरि करै ॥
सो फल मनोहर अमरतरुके, स्वर्णथाल भराय ही ॥ श्रीपार्श्व॰ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सलिल सुच्छ सु अगर चंदन अछित उज्जल ल्यायही ।
वर कुसुम चरुतैं छुधा नासै, दीप ध्वांत नसायही ॥
करि अर्घ धूप मनोग्य फल लै, " राम ' सिवसुख दायही ।

श्रीपार्श्वनाथ जिनेंद्र पूजूं, छिद्र दरप उपाय ही ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंच कल्याणक ।

दोहा ।

प्राणत स्वर्ग थकी चये, वामा उर अवतार ।
दोज असित वैशाख ही, हयो जजूं पद सार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ।

पौष कृष्ण एकादशी, तीन ज्ञानजुत देव ।
जनमें हरि सुर गिरि जजें, मैं जजहूं करि सेव ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

दुद्धर तप सुकुमार वय, काशी देस विहाय ।
पौष कृष्ण एकादशी, धरयौ जजूं गुण गाय ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ।

कृस्न चौथि सुभ चैतकी, हने घाति लहि ज्ञान।
कह्यौ धर्म दुविधा मुदा, जजूं बोध भगवान ॥ ४ ॥

ओं ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

सप्तमि श्रावण सुकल ही, सेप कर्म हनि वीर।
अविचल सिवथानक लयो, जजूं चरण धर धीर ॥ ५ ॥

ओं ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।

अथ जयमाला।

दोहा।

पार्श्वनाथ जिनके नमूं, चरण कमल जुगसार।
प्रचुर भवार्णव तुम हर्‌यौ, मुझ तारौ भव तार ॥ १ ॥

चाल—ते साधु मेरे उर बसो मेरी हरहु पातक पीर।

श्री पार्सनाथ जिनेंद्र, वंदू, सुद्ध मन वच काय।
धनि पिता आसासेनजी; धनि धन्य वामा माय ॥

पनि जनम काशी देशमें धानारसी शुभ ग्राम।
प्रभु पास थो मुझ दासकी सुनि अरज अविचल ठाम ॥ १ ॥
अतिशय मनोहर मजल जलद समान सुंदर काय।
मुख देखिकें ललचाय लोचन नेक तृपति न थाय ॥
पदकमलनखदुतिकमल चपला कोटिरवि छवि साम। प्रभुपास० ॥२॥
हूं अधोमुख पंचाग्नि तपतो कमठको चर क्रूर।
तिस आगनि जरते नाग बोधे देय वच वृष पूर ॥
ते भये हैं धरनेंद्र पद्मा भवनाधिक रिधि धाम ॥ प्रभुपास० ॥ ३ ॥
इम उरग मरत निहारिकें सब अधिर सरन न जोय।
संसार यो भ्रम जाल है जिम चपल चपला होय ॥
हूं एक चेतन सासतो थिर रहूं तजिकें धाम। प्रभुपास ॥ ४ ॥
इम चितवतां लोकांतिक सुर आय पूजे पाय।

परणाम करि संबोधि चाले चितवते गुण ध्याय ॥
धनि धन्य वय सुकुमारमें तप धर्यो अतिवल धाम ! प्रभुपास० ॥ ५ ॥
चंद्र समै जिन धरी दिछ्या विहरि अहिछिति जाय ।
तित ठये वनमैं दुष्ट वो सुर कमठको चर आय ॥
अतिरूप भीषण धारिकै फुंकार पन्नग स्याम । प्रभु पास० ॥ ६ ॥
ह्वै तुंग वारण सिंघ गरज्यौ उपलरज वरसाय ।
करि अगनि वरषा मेघ मूसल तडित परलय वाय ॥
प्रभु धीर वीर अत्यंत निरभय असुरको वल खाम । प्रभु पास० ॥ ७ ॥
वाही समै धरणेंद्रको नय मुकुट कंप्यो पीठ ।
हरि आय सिंघान रच्यौ फणमंड कीनों ईठ ॥
तव असुरकरनी भई निरफल अचल जिन जिम धाम ॥ प्रभु पास ।८।
धरि ध्यान जोग निरोधिकें चउघाति कर्म उपारि ।

लहि ज्ञान केवलतें चराचर लोक सकल निहारि ॥
मघवादि भूनि कुबेर कीनी कहै किम बुधि खाम । प्रभु पास० ॥९॥
हरि करी नुति कर जोरि विनती धन्य दिन इह वार ।
धनि घड़ी या प्रभु पासजी हम लहें भवकी पार ॥
धनि धन्य वानी सुनी मैं अघनासनी पुनि धाम ॥ प्रभु पास० ॥१०॥
वसु कर्म नासि विनासि वपु सिवनयरि पाई वीर ।
वसु द्रव्यतें वह धान पूजे हरें सबही पीर ॥
सो अचल है सम्मेद्पै मन भावहै वसु जाम । प्रभुपास ॥ ११ ॥
कर जोरिकैं " चंदराम,, भांपै अहो धनि तुम देव ।
भवि बोधिकैं भवसिंधुतारे तरन तारन टेव ॥
मैं नगत हूं गो तारि अबही ढील क्यों तुम काम । प्रभु पास० ॥१२॥
निति पढै जे नरनारि सबही हरैं तिनकी पीर ।

पृ०
२०२

सुर लोक लहि नर होय चक्री काम हलधर वीर ॥
फुनि सर्व कर्म जु घाति कैं लहि मोख सबसुख धाम ।
प्रभु पास द्यौ सुख दास को सुनि अरज अविचल ठाम ॥ १३ ॥

ओं ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

इति श्रीपार्श्वनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ २३ ॥

# अथ श्रीमहावीरजिनपूजा ।

अडिल ।

बोध सुद्ध परकासक इक प्रभु भान ही ।
लोक अलोक मझारि और नहीं आन ही ॥
प्रणमूं श्रीवर्द्धमान वीरके पाय ही ।
आह्वानन विधि करूं विमलगुण ध्याय ही ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

वरि पूज कारन [illegible] पदके, उमैं [illegible] लेपही ॥ श्रीवीर० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार मेरु सुपारि तरुके, सुमन गंधासक्त ही।
मधुवृंद आवैं भविनके, चखि लखैं होय पवित्र ही ॥
सो समरवाण विध्वंस कारन, कुसुम उत्कर लेय ही। श्रीवीर० ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पदमा-निवास सरोज आश्रित, सुधाकी आमोदस्यौं।
चित सुधा [illegible] नरो नृपनि है रचैं मधुकर मोदस्यौं ॥
सो ह्रीं क्षुधा रोग विध्वंसन, चारु चरु कर लेयही ॥ श्रीवीर० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्यप्रमादि जिनेंद्र महिमा, तेजतैं दरसाय ही।
पाप तम दिगदर्सों निवह सु, मूलतैं नसि जाय ही ॥

सो दीप मणिमय तेज भास्कर, कनक भाजन लेय ही । श्रीवीर० ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

धूप गंध सुवास आवें, धूम्र धूम्र दिशानि छवै ।
दिग्गज लिये पलो छिन धर, मौलत आवें दौडे ॥
सो मलय परिमल धाम रंजन, मुगति को अति प्रेयसी । श्रीवीर० ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

मृत फल दाडिम पक्व मधुर, रसनामें मनकूं हरें ।
आनंद पावन पुंज भरकूं, मनोवांछित फल करें ॥
भरि थाल कणमय आगर नरके, लखि चाखिकूं प्रेयसी । श्रीवीर० ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

नीर गंध दत्यादि द्रव्यले, कमलपद सनमति तने ।
जो जजै प्यारें वंदि मनवं, ठानि उत्सव अति घने ॥
सुर होय पद्मी काम हलधर, तीर्थं पदको श्रेयसी ।

सुख "रामचंद" लहंत शिवके, अर्घ करि प्रभु ध्येयही ॥ ९ ॥

ओं ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ पंचकल्याणक ।

दोहा ।

षष्ठी सुकल अषाढही, पुष्पोत्तरतैं देव ।
चय त्रिसला उर अवतरे, जजूं भक्ति धरि एव ॥ १ ॥

ओं ह्रीं आषाढशुक्लषष्ठ्यां गर्भमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

चैत्र सुकल तेरसि सुरां, कीनों जन्म कल्यान ।
छीर उदधितैं मेरुपै, मैं जजहूं धरि ध्यान ॥ २ ॥

ओं ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं नि० ॥

अगहन दसमी कृस्नही, तप धार्यौ वन जाय ।
सुरनरपति पूजा करी, मैं जजहूं गुण गाय ॥ ३ ॥

ओं ह्रीं मार्गकृष्णदशम्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति० ।

जय कुंडलपुर जिन जन्मधान । हरिवंस व्योमगधि सुष्ठु भान ॥
जय कनक वरन करसहकाय । हरि चिह्न बहत्तर वरस आय ॥ ३ ॥
जय इंद्र कह्यौ अति वीर सूर । सुनि देव चल्यौ ह्वै सर्प क्रूर ॥
फुंकार ज्वाल विकराल देख । क्रीडत कुमार भाजे विशेख ॥ ४ ॥
प्रभु धीर महा पंनग अज्ञान । करि क्रीड़ हरयौ मदको वितान ।
ह्वै प्रगट देव नय पूजि पाय । परसंसि कह्यौ महावीर राय ॥ ५ ॥
लखि पूरव भव अनुप्रेक्ष चिंत । भयभीत भये भवतैं अत्यंत ॥
लौकांत आय थुति पूजि पाय । निज थान गये सुर असुर आय ।६।
रचि सिवका करि उत्सव अपार । वन जाय धरे प्रभु तजि सिंगार ॥
नुति सिद्ध लौंच कच नगन धाय । धरि षष्टम लय चिद्रूप लाय ।७।
तप द्वादस द्वादस वर्ष ठानि । चउघाति हने गहि खडग ध्यान ॥
जय मंत चतुष्टय लब्ध देव । वसु प्रातिहार्य अतिशै सुमेव ॥ ८ ॥

धर्म अर्थ लहि कामदेव नरपति पदपावैं।
वृषभ आदि जिन जजैं अर्घकरि जे नरध्यावैं ॥ १ ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल।

वृषभ आदि चउवीस जिनेस्वर ध्यावही।
अर्घ करें गुण गायर तूर बजावही ॥
ते पावैं सिव सर्म भक्ति सुरपति करैं।
"रामचंद, सक नाहि कीर्ति जग विस्तरैं ॥ २ ॥

इत्याशीर्वादः।

——:०:——

इति श्रीचतुर्विंशतिजिनपूजा समाप्ता।